Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजपाल

ग़ालिब

और उनकी शायरी

सं. प्रकाश पंडित

जीवनी • ग़ज़लें • नज़्में • शे'र • रुबाइयां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation

काम है मेरा तग़य्युर नाम है मेरा शबाब
मेरा नारा 'इंकिलाब-ओ-इंकिलाब-ओ-इंकिलाब'
—जोश मलीहाबादी

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलाएँ क्या
—ग़ालिब

...मोहब्बत की बोली

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उर्दू के लोकप्रिय शायर

WITH LOVE TO
HINDU EDUCATION SOCIETY KASHMIR
FROM :
DR. N.L. ZUTSHI, Mumbai

ग़ालिब

संपादक : प्रकाश पंडित

ग़ालिब की ज़िन्दगी, उनकी शायरी, 'दीवान-ए-ग़ालिब' में से
उनकी बेहतरीन ग़ज़लें

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 3276 (D)
Dated 4.6.19

राजपाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्य : पचास रुपये (Rs. 50.00)

संस्करण : 2006 © राजपाल एण्ड सन्ज़

ISBN-13 : 978-81-7028-204-4
ISBN-10 : 81-7028-204-7
GHALIB (Life-Sketch & Selected Poems)
Edited by Prakash Pandit

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006
www.rajpalsons.com

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.. 3276 (D)
Dated 4.6.19.

क्रम

ज़िन्दगी 5
संकलन 21

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है,
कोई बतलाओ कि हम बतलाएं क्या

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये मसाइले-तसव्वुफ़,[1] ये तेरा बयान 'ग़ालिब'
तुझे हम वली[2] समझते जो न बादहख़्वार[3] होता

यह केवल मिर्ज़ा 'ग़ालिब' की विनयशीलता है कि अपने बादहख़्वार होने के कारण उन्होंने अपने 'वली' होने का दावा नहीं किया, अन्यथा जहां तक उर्दू साहित्य का सम्बन्ध है, और इससे अधिक साहित्य तथा जीवन का सम्बन्ध है, 'ग़ालिब' न केवल अपने युग के 'अदबी वली' (साहित्यिक अवतार) थे, न केवल आधुनिक युग के 'अदबी अली' हैं, बल्कि जब तक उर्दू भाषा और उसका साहित्य मौजूद रहेगा, उनका स्थान 'अदबी वली' के रूप में सदैव बना रहेगा।

परम्पराओं से विद्रोह करने और डगर से हटी हुई बात कहने के अपराध में संसार जो व्यवहार हर 'वली' से करता रहा है, वही व्यवहार 'ग़ालिब' के साथ भी हुआ। 'ग़ालिब' से पहले उर्दू शायरी में भाव-भावनाएं तो थीं, भाषा तथा शैली के 'चमत्कार' भी थे, लेकिन वे भाव-भावनाएं और भाषा तथा शैली के चमत्कार 'गुलो-बुलबुल', 'ज़ुल्फ़ो-कमर' (माशूक़ के केश और कमर) 'मीना-ओ-जाम' (शराब की सुराही और प्याला) के वर्णन तक सीमित थे। बहुत हुआ तो किसी ने तसव्वुफ़ (सूफ़ीवाद) का सहारा लेकर संसार की असारता एवं नश्वरता पर दो-चार आँसू बहा दिए और निराशावाद के बिल में दुबक गया। ऐसे समय में, जबकि अधिकांश शायर :

सनम[4] सुनते हैं तेरी भी कमर है,
कहां है ? किस तरफ़ है ? औ' किधर है ?

---

1. दर्शन-सम्बन्धी समस्याएं, 2. सिद्ध, अवतार, 3. मद्यप, 4. माशूक़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ां ने शहर सुपुर्द कर दिया और अताअत (अनुकरण) की। जनरल साहब ने चार सौ सवार का ब्रिगेडियर किया और एक हज़ार सात सौ की तनख्वाह मुक़र्रर की। फिर जब उसने अपने ज़ोरे-बाज़ू से सौंख, सौंसा दो परगने भरतपुर के क़रीब होल्कर के सवारों से छीन लिए तो जनरल साहब ने वो दोनों परगने बहादुर मौसूफ़ (उक्त महोदय) को बतरीक़े-इस्तमरार (हमेशा के लिए) अता फ़र्माये। मगर ख़ां मौसूफ़ जागीर मुक़र्रर होने के दस महीने के बाद बमर्गे-नागाह (अचानक मृत्यु) हाथी पर से गिर के मारा गया। जागीर सरकार में बाज़याफ़्त हुई (वापस चली गई) और उसके एवज़ नक़्दी मुक़र्रर हो गई और शरका (साझीदारों) को दे-दिलाकर साढ़े सात सौ रुपया इस शख़्स (ग़ालिब) की ज़ात को उसी ज़रे-मुआ़फी (रुपये) में से मिलते हैं।"

पिता और चाचा के देहान्त के बाद मिर्ज़ा 'ग़ालिब' का पालन-पोषण उनके ननिहाल (आगरा ही में) हुआ। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा के संबंध में अधिक सामग्री नहीं मिलती, लेकिन उनकी रचनाओं में खगोल, ज्योतिष, तर्क, दर्शन, पदार्थ-विज्ञान, संगीत, तसव्वुफ़ इत्यादि की असंख्य परिभाषाओं से मालूम होता है कि उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पूरा ध्यान दिया गया था। उनकी आयु दस-ग्यारह वर्ष से अधिक नहीं थी और अभी वे मकतब (पाठशाला) में पढ़ते थे कि उन्होंने शे'र कहना शुरू कर दिया। उन्हीं दिनों उन्हें फ़ारसी भाषा के एक बहुत बड़े विद्वान मुल्ला अब्दुल समद ईरानी से, जो भ्रमणार्थ भारत आए थे, फ़ारसी पढ़ने का अवसर मिला। गुरु ने योग्य शिष्य की मनोवृत्ति भांपकर उसे फ़ारसी के प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य की जानकारी दिलाने में कोई कसर न उठा रखी। स्वयं मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ने अपनी पुस्तकों में जहाँ कहीं उनकी चर्चा की है, बड़े प्रेम और आदरपूर्ण शब्दों में की है। तेरह वर्ष की आयु में मिर्ज़ा का विवाह दिल्ली के लोहारू कुल की एक महिला उमराव बेग़म से हो गया और शादी के दो-तीन साल बाद वे स्थायी रूप से दिल्ली में आ बसे, जिसे एक स्थान पर उन्होंने यों बयान किया है :

"सात रजब 1225 (9 अगस्त, 1810) को मेरे वास्ते हुक्मे-दवामे-हब्स

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(स्थायी क़ैद का हुक्म) सादिर हुआ। एक बेड़ी (यानी बीवी) मेरे पाँव में डाल दी और दिल्ली शहर को ज़िंदान (क़ैदखाना) मुक़र्रर किया और मुझे उस ज़िंदान में डाल दिया।''

शे'रो-शायरी की लटक तो पहले से थी। अब दिल्ली पहुँचे तो यहाँ के शायराना वातावरण और आए दिन के मुशायरों ने क़लम में और तेज़ी भर दी। लेकिन नियमित रूप से शायरी में वे किसी के शिष्य नहीं बने, बल्कि अपने फ़ारसी भाषा तथा साहित्य के विशाल अध्ययन और ज्ञान के कारण उन्हें शब्दावली और शे'र कहने की कला में ऐसी अनगिनत त्रुटियाँ नज़र आईं, जिन्हें प्रस्तुत कर बड़े-बड़े उस्ताद गौरव का अनुभव करते थे। उनका मस्तिष्क एक टेढ़ी रेखा और एक प्रश्न-चिह्न बन गया और उन्होंने उस्तादों पर टीका-टिप्पणी शुरू कर दी। उनका मत था कि हर पुरानी लकीर सिराते-मुस्तकीम (सीधा मार्ग) नहीं है और अगले जो कुछ कह गए हैं, वह पूरी तरह सनद (प्रमाणित बात) नहीं हो सकती।'' अंदाज़े-बयां (वर्णन शैली) से नज़र हटाकर और ''अंदाज़े-बयां और''[1] अपनाकर जब विषय-वस्तु की ओर देखा तो वहाँ भी वही जीर्णता नज़र आई। कहीं आश्रय मिला तो 'बेदिल' (एक प्रसिद्ध शायर) की शायरी में, जिसने यथार्थता की कड़ी दीवारों की बजाय कल्पना के रंगों से अपने चारों ओर एक दीवार खड़ी कर रखी थी। 'ग़ालिब' ने उस दीवार की ओर हाथ बढ़ाया तो उसके रंग छूटने लगे और आँखों के सामने ऐसा धुँधलका छा गया कि परछाइयाँ भी धुँधली पड़ने लगीं, जिनमें यदि वास्तविक शरीर नहीं तो शरीर के चिह्न अवश्य मिल जाते थे। अतएव बड़े वेगपूर्ण परन्तु उलझे हुए ढंग से पच्चीस वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते उन्होंने लगभग 2000 शे'र 'बेदिल' के रंग में कह डाले, जिस पर उर्दू के प्रसिद्ध शायर और उस्ताद मीर तक़ी 'मीर' ने भविष्यवाणी की कि ''अगर इस लड़के को कोई क़ामिल उस्ताद मिल गया और उसने इसे सीधे रास्ते पर डाल दिया, तो लाजवाब शायर बनेगा, वरना मोहमल (अर्थहीन) बकने

1. हैं और भी दुनिया में सुख़नवर बहुत अच्छे।
कहते हैं कि ग़ालिब का है अंदाज़े-बयां और।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगेगा।''

यह कामिल उस्ताद 'ग़ालिब' को कहीं बाहर से नहीं मिला, बल्कि यह उनकी आलोचनात्मक दृष्टि थी जिसने न केवल उस काल के 2000 शे'रों को बड़ी निर्दयता से काट फेंकने की प्रेरणा दी बल्कि आज जो छोटा-सा 'दीवाने-ग़ालिब' हमें मिलता है और जिसे मौलाना मोहम्मद हुसैन 'आज़ाद' (प्रसिद्ध आलोचक) के कथनानुसार हम ऐनक की तरह आँखों से लगाए फिरते हैं, उसका संकलन करते समय 'ग़ालिब' ने हृदय-रक्त से लिखे हुए अपने सैकड़ों शे'र नज़र-अंदाज़ कर दिए थे।

'ग़ालिब' जब तक आगरा में रहे, उन्हें ख़र्च की कोई तंगी न रही। दिल्ली आए तो कुछ समय तक यहाँ भी वही रंग-ढंग रहा। साढ़े सात सौ रुपये की वार्षिक पेनशन नवाब अहमद बख़्श ख़ां से मिलती थी। रियासत अलवर से भी कुछ न कुछ आ जाता था। माता जीवित थीं, वे कभी-कभार कुछ भेज देती थीं, लेकिन यह सम्पन्नता अधिक दिनों तक न चली। नवाब अहमद बख़्श ख़ां ने 1826 ई० में अंग्रेजी राज्य और अलवर दरबार की स्वीकृति और अपने ख़ानदान की रज़ामंदी से अपनी जायदाद का विभाजन कर दिया और स्वयं एकांतवास धारण कर लिया। 'ग़ालिब' की पेनशन से संबंधित इलाक़ा चूँकि नवाब अहमद बख़्श ख़ां के बड़े लड़के शम्सउद्दीन अहमद ख़ां के हिस्से में आया था और 'ग़ालिब' के सम्बन्ध नवाब के विरोधी लोगों से थे, इसलिए पहले तो पेनशन की अदायगी में तरह-तरह के रोड़े अटकाए गए और फिर अप्रैल 1831 ई० में वह बिल्कुल बंद कर दी गई। इसके साथ ही ऋणदाताओं ने (मिर्ज़ा अपने सुख, विलास और मदिरापान के लिए प्रायः ऋण लेते रहते थे) मारे तकाज़ों के नाक में दम कर दिया। विपत्ति पर विपत्ति यह पड़ी कि उनके छोटे भाई मिर्ज़ा यूसुफ़ उन्हीं दिनों अट्ठाईस वर्ष की आयु में पागल हो गए। परिणाम इसका यह हुआ कि मिर्ज़ा 'ग़ालिब', जिन्होंने तंगी और परेशानी का एक दिन भी न देखा था, विपत्तियों का ऐसा पहाड़ टूट पड़ने से एकदम घबरा गए। इसी सम्बन्ध में, अर्थात् अपनी पेनशन का झगड़ा गवर्नर-जनरल की कौंसल द्वारा चुकवाने और उसे फिर से जारी कराने के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्बन्ध में, उन्होंने कलकत्ता की लम्बी यात्रा की और तीन वर्ष वहाँ गुज़ारे। वहाँ, और रास्ते में लखनऊ आदि शहरों में, उन्होंने बड़े-बड़े उस्तादों से लोहा भी लिया।

पेनशन का झगड़ा कहीं 1837 ई० में जाकर तै हुआ जब नवाब शम्सउद्दीन ख़ां एक अंग्रेज़ रेज़ीडेंट का वध कराने के अपराध में फाँसी पर लटका दिए गए और उनकी रियासत अंग्रेज सरकार ने अपने अधिकार में ले ली। इस बीच में 'ग़ालिब' :

क़र्ज़ की पीते थे मै और समझते थे कि हाँ।
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन।।

पर अमल करते हुए चालीस-पचास हज़ार के ऋणी हो गए; और एक दीवानी मुक़दमे के सिलसिले में जब उनके विरुद्ध 5000 रुपये की डिगरी हो गई, तो उनका घर से बाहर कदम रखना असम्भव हो गया। (उन दिनों यह नियम था कि यदि ऋणी कोई सम्मानित व्यक्ति हो तो डिगरी की रक़म अदा न करने की हालत में उसे केवल उस समय गिरफ़्तार किया जा सकता था जब वह अपने घर की चारदीवारी से बाहर हो।) यह इन्हीं और भावी विपत्तियों की ही देन थी कि उनके क़लम से :

रंज से ख़ूगर[1] हुआ इन्सां तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसां हो गईं।।

ऐसे उच्चकोटि के अनुभवपूर्ण शे'र निकले। यह मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ही की विशेषता थी कि उन दिनों, जबकि साहित्य-समालोचना का लगभग अभाव था, उन्होंने महान शायरी का यह भेद पा लिया कि शे'र शून्य में टामक-टोइयाँ मारने का नहीं, किसी अनुभव के व्यक्तिगत प्रकटीकरण का नाम है और यह कि प्रत्येक काल में बड़ा शायर केवल वही हो सकता है जो अपने काल की विडम्बनाओं तथा संघर्षों को सहिष्णुता और आत्म-सम्मान में रचे हुए संकेतों में प्रकट कर सके। आने वाली पीढ़ियों में बिना उपदेशक बने यह अनुभूति उत्पन्न कर सके कि उनको भी अपने

1. अभ्यस्त।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काल की नई और जटिल कठिनाइयों का मुक़ाबला सहिष्णुता और आत्म-सम्मान के साथ करना है।

साढ़े सात सौ रुपये वार्षिक की पेन्शन तो पुनः जारी हो गई, लेकिन इतने भर से क्या होता था। व्यक्तिगत और पारिवारिक व्यय और मुक़द्दमों और ऋणदाताओं ने जीना दूभर कर दिया। कई बार उन्होंने किसी रियासत की नौकरी करने के बारे में भी सोचा, लेकिन चरम सीमा पर पहुँचे हुए आत्म-सम्मान ने इस बात की आज्ञा न दी।

आत्म-सम्मान की हालत यह थी कि 1852 में जब उन्हें दिल्ली कॉलेज में फ़ारसी के मुख्य अध्यापक का पद पेश किया गया और अपनी दुरवस्था सुधारने के विचार से वे टामसन साहब (सेक्रेट्री, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया) के बुलावे पर उनके यहाँ पहुँचे, तो यह देखकर कि उनके स्वागत को टामसन साहब बाहर नहीं आए, उन्होंने कहारों को पालकी वापस ले चलने को कह दिया ('ग़ालिब' जहाँ कहीं जाते थे, चार कहारों की पालकी में बैठकर जाते थे।) टामसन साहब को सूचना मिली तो बाहर आए और कहा कि चूँकि आप मुलाक़ात के लिए नहीं नौकरी के लिए आए हैं इसलिए कोई स्वागत को कैसे हाज़िर हो सकता है ? इसका उत्तर मिर्ज़ा ने यह दिया कि मैं नौकरी इसलिए करना चाहता हूँ कि उससे मेरी इज़्ज़त में इज़ाफा हो, न कि जो पहले से है, उसमें भी कमी आ जाये। अगर नौकरी के माने इज़्ज़त में कमी आने के हैं, तो ऐसी नौकरी को मेरा दूर ही से सलाम! और सलाम करके लौट आए।

आर्थिक परेशानियाँ पूर्ववत् थीं कि मई 1847 ई० में मिर्ज़ा पर एक और आफ़त टूटी। उन्हें अपने ज़माने के अमीरों की तरह बचपन से चौसर, शतरंज आदि खेलने का चसका था। उन दिनों में भी वे अपना ख़ाली समय चौसर खेलने में व्यतीत करते थे और मनोरंजनार्थ कुछ बाजी बदकर खेलते थे। चांदनी चौक के कुछ जौहरियों को भी जुए की लत थी, अतएव वे मिर्ज़ा ही के मकान पर आ जाते थे और यों धीरे-धीरे उनका मकान एक बाक़ायदा जुआखाना बन गया। एक दिन जब मकान में जुआ हो रहा था, शहर कोतवाल ने मिर्ज़ा को रंगे-हाथों

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पकड़ लिया[1]।

शाही दरबार (बहादुरशाह ज़फ़र) और दिल्ली के रईसों की सिफ़ारिशें गई, लेकिन सब व्यर्थ। उन्हें सपरिश्रम छः महीने का कारावास और दो सौ रुपये जुर्माना हो गया। बाद में असल जुर्माने के अतिरिक्त पचास रुपये और देने से परिश्रम माफ़ हो गया और डॉक्टर रास, सिविल सर्जन दिल्ली की सिफ़ारिश पर वे तीन महीने बाद ही छोड़ दिए गए। लेकिन 'ग़ालिब' जैसे स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए यह दण्ड मृत्यु के समान था। एक स्थान पर लिखते हैं :

> मैं हरएक काम खुदा की तरफ़ से समझता हूँ और खुदा से लड़ नहीं सकता। जो कुछ गुज़रा, उसके नंग (लज्जा) से आज़ाद, और जो कुछ गुज़रने वाला है उस पर राज़ी हूँ। मगर आरज़ू करना आईने-अबूदियत (उपासना के नियम) के खिलाफ़ नहीं है। मेरी यह आरज़ू है कि अब दुनिया में न रहूँ और अगर रहूँ तो हिन्दोस्तान में न रहूँ।

यह दुर्घटना व्यक्तिगत रूप से उनके स्वाभिमान की पराजय का संदेश लाई, अतएव :

बंदगी[2] में भी वो आज़ाद-ओ-खुदबीं[3] हैं कि हम।
उल्टे फिर आयें दरे-काबा[4] अगर वा न हुआ[5]।।

कहने वाले शायर ने विपत्तियों और आर्थिक परेशानियों से घबराकर अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुरशाह 'ज़फ़र' का दरवाज़ा खटखटाया। बहादुरशाह ज़फ़र ने (जो स्वयं एक अच्छे शायर और उस्ताद 'ज़ौक़' के शिष्य थे) तैमूर ख़ानदान का इतिहास फ़ारसी भाषा में लिखने का काम मिर्ज़ा के

---

1. मौलाना हाली ने मिर्ज़ा के एक पत्र के आधार पर लिखा है कि "शहर का कोतवाल उनका शत्रु था, इसलिए उन्हें जुएबाज़ी के अपराध में पकड़ लिया।" यह बात सही नहीं है। 'हाली' चूँकि मिर्ज़ा के शिष्य और स्वयं बड़े चरित्रवान थे, इसलिए उन्होंने गुरु की लाज रखी है। 2. भक्ति, 3. स्वतन्त्र और आत्म प्रशंसक, 4. काबे का दरवाज़ा, 5. खुला न मिला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुपुर्द कर दिया और पचास रुपये मासिक वेतन के अतिरिक्त 'नज्मुद्दौला दबीरुलमुल्क निज़ाम-जंग' की उपाधि और दोशाला आदि ख़िलअ़त प्रदान की और यों मिर्ज़ा बाक़ायदा तौर पर क़िले के नौकर हो गए। जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है—1854 ई० में वलीअहद सल्तनत (राज्य के उत्तराधिकारी) फ़त्ह-उल-मुल्क मिर्ज़ा फ़ख़रू उनके शिष्य हुए। उनकी सरकार से चार सौ रुपया वार्षिक वेतन बँधा। उसी वर्ष 16 नवम्बर को उस्ताद 'ज़ौक़' का देहान्त हो गया और बादशाह ने भी अपनी ग़ज़लें मिर्ज़ा को दिखाना शुरू कर दीं। [मिर्ज़ा 'ग़ालिब' इस काम को बादिले-नाख़्वास्ता (अनिच्छापूर्वक) करते थे।—'हाली', 'यादगारे-ग़ालिब'] इसके अतिरिक्त बादशाह के सबसे छोटे शहज़ादे मिर्ज़ा ख़िज्र सुलतान ने भी उनकी शिष्यता ग्रहण की और कदाचित् उसी वर्ष नवाब वाजिदअली शाह की ओर से भी पाँच सौ रुपया वार्षिक वजीफ़ा नियत हो गया। स्पष्ट है कि इसके बाद मिर्ज़ा सुख की साँस लेने योग्य हो गए होंगे लेकिन दुर्भाग्य से यह स्थिति भी अधिक समय तक न रही। दो वर्ष बाद ही (1856 में) मिर्ज़ा फ़ख़रू हैज़े का शिकार हो गए। उसी वर्ष अंग्रेज़ों ने नवाब वाजिदअली शाह को तख़्त से उतार दिया। फिर मई 1857 में 'गदर' हो गया और सितम्बर 1858 ई० में मिर्ज़ा ख़िज्र सुलतान हुमायूँ के मक़बरे पर से गिरफ्तार होकर मेजर हडसन की गोली का निशाना बन गए और बहादुरशाह ज़फ़र को निर्वासित करके रंगून भेज दिया गया।

'ग़दर' के दिनों में क्या कुछ हुआ और मिर्ज़ा पर क्या गुज़री, इसका उल्लेख मिर्ज़ा ने अपनी पुस्तक 'दस्तंबो' में किया है। लिखते हैं कि 11 मई को देसी फ़ौज़ शहर में दाखिल हुई और उसी दिन मैंने मकान का दरवाज़ा बन्द करके बाहर की आमदो-रफ़्त ख़त्म कर दी। लेकिन मिर्ज़ा के कुछ अन्य बयानों से मालूम होता है कि (चूँकि उन्हें मालूम नहीं था कि ऊँट किस करवट बैठेगा, इसलिए) वे क़िले में भी हो आया करते थे। वास्तविकता जो भी हो, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि यह समय मिर्ज़ा पर बहुत भारी था। ख़र्च पूर्ववत् था और आय बिल्कुल नहीं थी। यदि उनके कुछ हिन्दू मित्र, उदाहरणतः हरगोपाल 'तफ़्ता' मेरठ से रुपया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न भेजते और महेशदास शराब का प्रबन्ध न करते, तो मिर्ज़ा के कथनानुसार 'कोई मेरी बेकसी का गवाह न होता।'

मिर्ज़ा ने ग़दर के दिनों में अंग्रेज़ों की कोई विशेष सहायता नहीं की थी कि उन्हें कोई नया पुरस्कार या सम्मान मिलता; लेकिन उनके विचार में उनसे कोई विरोधी बात भी नहीं हुई थी जिसके कारण उनकी पेनशन ज़ब्त कर ली जाती। लेकिन शान्ति स्थापित होने के बाद जब उन्होंने यह मामला उठाया तो उत्तर मिला कि ग़दर के दिनों में तुम्हें विद्रोहियों से सहानुभूति थी, अब सरकार से क्यों मिलना चाहते हो ? पेनशन जारी न हुई और मिर्ज़ा निराश होकर, नवाब रामपुर के बुलावे पर, जहाँ से उन्हें (दिल्ली में रहें तो सौ रुपया और रामपुर में रहें तो दो सौ रुपया) आर्थिक सहायता मिलने की आशा थी, रामपुर गए और कुछ समय वहाँ रहकर पुनः दिल्ली लौट आए। बाद में नवाब रामपुर और स्वयं अंग्रेज़ी राज्य के इस फ़ैसले से कि जो लोग ग़दर से पहले सरकारी ख़ज़ाने से वज़ीफ़ा या पेनशन पाते थे तो उनको वज़ीफ़े और पेनशनें पुनः प्रदान कर दी जाएँ, 1860 ई० में जब मिर्ज़ा को एक साथ पिछले तीन वर्ष की पेनशन (दो हज़ार दो सौ पचास रुपये) मिली तो पूरी की पूरी रक़म ऋणदाताओं द्वारा हड़प कर लेने पर भी उन पर काफ़ी ऋण बना रहा, जिसे वे जीवन-भर न चुका सके।

अंतिम दिनों में आर्थिक संकट के अतिरिक्त वे शारीरिक संकट में भी ग्रस्त हुए। 1858 ई० में उन पर पेट में मरोड़ उठने का पहला आक्रमण हुआ और इसके बाद थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् ये दौरे आख़िर तक जारी रहे। पूरा शरीर फोड़ों से भर गया, अण्डकोश बढ़ने का रोग भी हुआ, और 1866 ई० में तो शारीरिक और मानसिक स्थिति यह हो गई कि :

> मेरे मुहिब (प्रिय मित्र) मेरे महबूब ! तुमको मेरी ख़बर भी है? पहले नातवाँ था, अब नीम-जान हूँ। आगे बहरा था, अब अन्धा हुआ चाहता हूँ। जहाँ चार सतरें लिखीं, उंगलियाँ टेढ़ी हो गईं। हुरूफ़ (अक्षर) सूझने से रह गए। इकहत्तर बरस जीया, बहुत जीया अब ज़िंदगी बरसों की नहीं, महीनों और दिनों की है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और सचमुच इस भविष्यवाणी के बाद वे अधिक दिनों तक जीवित न रहे। 15 फरवरी 1869 के दिन दोपहर ढले इस महान शायर और साहित्यकार का देहान्त हो गया, जिसने एक ओर उर्दू शायरी को परंपराओं और शायरों के अन्धानुकरण की ज़ंज़ीरों से निकालकर एक नये और दिव्य राजपथ पर डाल दिया, तो दूसरी ओर उर्दू गद्य[1] में ऐसे कमाल दिखाए कि "रहे नाम ग़ालिब का"।

मूल्यांकन

जैसा कि 'ग़ालिब' की जीवनी से ज़ाहिर है, जिस समय उन्होंने होश सँभाला, मुग़ल राज्य का चिराग़ बुझ रहा था। दिल्ली अंग्रेज़ों के अधिकार में चली गई थी और शहंशाह बहादुरशाह ज़फ़र की हुकूमत क़िले तक सीमित रह गई थी। पुरानी व्यवस्था मिट रही थी और नई व्यवस्था ने अभी पूरी तरह जन्म नहीं लिया था। ऐसे अव्यवस्थापूर्ण वातावरण में, जबकि अन्य शायर तसव्वुफ़ या निराशावाद या किसी ऐसे ही अन्य वाद के शिकार हो चुके थे, 'ग़ालिब' अपना हृदयग्राही व्यक्तित्व, मानव-प्रेम, सीधा, स्पष्ट यथार्थ और इन सबसे अधिक दार्शनिक दृष्टि लेकर साहित्य-क्षेत्र में आए। वे चूँकि शायरी को तुकबंदी नहीं, सार्थक कला मानते

---

1. यों तो मिर्ज़ा ने अपने जीवन में फ़ारसी और उर्दू शायरी के साथ-साथ फ़ारसी और उर्दू गद्य में भी कई पुस्तकें लिखीं और उनके कई संस्करण भी प्रकाशित हुए, लेकिन उनके गद्य का जो कमाल उनके पत्रों में (मित्रों और शिष्यों के नाम) मिलता है उससे यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि वे शायर बड़े थे या गद्य-लेखक। पत्र-लेखन का ढंग उस काल में यह था कि पत्र अनगिनत और अद्भुत उपाधियों से शुरू किया जाता था और एक वाक्य में कही जा सकने वाली बात के लिए पचासों वाक्य प्रयोग में लाए जाते थे। मिर्ज़ा के नूतनताप्रिय स्वभाव को यह ढंग बेकार और भौंडा नज़र आया और उन्होंने अपनी शायरी की तरह नये ढंग के पत्र-लेखन की नींव डाली।
(ग़ालिब के पत्रों के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। अभी और खतों की तलाश हो रही है।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे और इस कसौटी पर खरी न उतरने वाली शायरी से उन्हें घोर घृणा थी और 'बेदिल' की काल्पनिक उड़ानों से वे बहुत प्रभावित थे। इसलिए जब भी उन्होंने क़लम उठाया, नई शैली के साथ एक नया विचार और एक नया विषय दिया। शुरू ही से उनकी शायरी इस वास्तविकता को साथ लेकर आई कि विषय-वस्तु और काव्य-रूप दो विभिन्न चीज़ें नहीं हैं, और न किसी एक को दूसरी पर प्रधानता प्राप्त है। बल्कि विषय-वस्तु काव्य-रूप को अपने साथ लेकर आती है और विषय-वस्तु के साथ-साथ काव्य-रूप बदलता रहता है। अपनी बात के विकृत तथा जीर्ण हो जाने के संशय से उन्होंने जीर्ण और पिटे हुए रूपकों और उपमाओं के प्रयोग के स्थान पर नये रूपकों और उपमाओं का आविष्कार किया। इस कठिन डगर में अनगिनत बाधाएँ खड़ी हुईं। उनके समकालीन शायरों ने उनकी नूतनता की हँसी उड़ाई, उनके 'मोहमल-गो' इत्यादि कई नाम धरे, लेकिन वे चुपचाप रास्ते के काँटों से दामन बचाते आगे बढ़ते रहे; बल्कि छींटे उड़ाने वालों का कोई शे'र यदि उन्हें पसन्द आ गया, तो जी खोलकर उसकी दाद दी। 'ज़ौक़' के मुँह से यह शे'र सुनकर उछल पड़े :

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जाएँगे।
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे ?

और 'मोमिन' के इस शे'र पर तो यहाँ तक कह दिया कि मेरा पूरा दीवान ले लो और मुझे यह शे'र दे दो :

तुम मेरे पास होते हो गोया।
जब कोई दूसरा नहीं होता।।

उन्होंने उस ज़माने में भी जागीरदारी के मिटते हुए मूल्यों का मातम किया और उभरती हुई नई जीवन-व्यवस्था की स्तुति की, जब नई व्यवस्था के प्रसिद्ध प्रचारक सर सय्यद अहमद (अलीगढ़) में ज़बान हिलाने का साहस न था। 'ग़ालिब' को उर्दू शायरी के सबसे ऊँचे सिंहासन पर बिठाने के लिए इतिहास को शायद कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी पड़ती यदि उन्हीं दिनों उनके योग्य शिष्य और प्रसिद्ध लेखक तथा सुधारक मौलाना 'हाली'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने 'यादगारे-ग़ालिब' में उनके शे'रों की व्याख्या न की होती। लेकिन गालिब की शायरी का वास्तविक मूल्यांकन उनके देहान्त के लगभग तीस वर्ष बाद होना शुरू हुआ, जब पश्चिमी शिक्षा ने लोगों के मस्तिष्क प्रकाशमान करने शुरू किए और शिक्षित लोग शायरी में घिसे-पिटे विषयों से उकताकर दर्शन-सम्बन्धी विचार ढूँढ़ने लगे। 'ग़ालिब' के अतिरिक्त पूरी उर्दू शायरी में ये विचार और कहाँ थे कि लोगों की नज़रें अटकतीं ? अतएव 'ग़ालिब' की शायरी की सर्वप्रियता के साथ-साथ बहुत-से शायरों ने उनका रंग अपना लिया। उनकी-सी सफलता तो किसी को प्राप्त न हो सकी, हाँ, इन प्रयासों से पूरी उर्दू शायरी का स्वभाव बदल गया और प्राचीन शायरी नज़रों से गिर गई। 'हाली' के अतिरिक्त 'ग़ालिब' को अपना आदर्श तथा नेता मानकर जिन शायरों ने बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियों की माँगें पूरी कीं और 'ग़ालिब' द्वारा स्थापित परम्पराओं को एक बाक़ायदा स्कूल का रूप दिया, उनमें 'इक़बाल' का नाम सबसे पहले आता है। और 'इक़बाल' के बाद का तो कोई उर्दू शायर ऐसा नहीं मिलेगा जिसने 'ग़ालिब' के प्रति अपनी असीम श्रद्धा प्रकट न की हो, बल्कि उन्हें उर्दू शायरी का 'बाबा-ए-आदम' स्वीकार करने में ज़रा भी हिचकिचाहट का अनुभव किया हो। आज न केवल उर्दू शायरों और लेखकों को, न केवल भारत सरकार को (जिसने निज़ामुद्दीन में मिर्ज़ा के मज़ार को श्रद्धास्वरूप नये सिरे से बनवाकर और डाक की टिकटों पर मिर्ज़ा का चित्र छापकर इस महान शायर की महानता को स्वीकार किया), बल्कि पूरे देश की जनता को अपने इस भारतीय शायर पर यथोचित गर्व है। और साहित्य को चूँकि भूगोल और भाषा की सीमाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता, और 'ग़ालिब' चूँकि उर्दू भाषा और केवल भारत ही के नहीं पूरी मानव-जाति के शायर थे, इसलिए विश्व-साहित्य में शेक्सपियर, वर्ड्सवर्थ, मिल्टन, कालिदास, टैगोर आदि की तरह उन्हें जितना ऊँचा स्थान दिया जाए, कम है।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चयन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रदीफ़ अलिफ़ (अ)[1]

नक़्श फ़रियादी है किस की शोख़ी-ए-तहरीर का
काग़ज़ी है पैरहन हर पैकरे-तस्वीर का[2]।।
कावेकावे[3]-सख़्त-जानी-हाय तनहाई न पूछ।
सुबह करना शाम का, लाना है जूए-शीर का[4]।।
आगही[5] दामे-शुनीदन[6] जिस क़दर चाहे बिछाए।
मुद्दआ[7] अन्क़ा[8] है अपने आ़लमे-तक़रीर का[9]।।

✣ ✣ ✣

---

1. वह अक्षर जो ग़ज़ल के हर शे'र के अन्त में आता है। 2. सृष्टि के प्रत्येह चिह्न में किसी ने अपनी चित्रकारी से इतनी शोखियां भर दी हैं कि किसी व्यक्ति में उन्हें सहन करने की शक्ति नहीं, अतएव हर व्यक्ति फ़रियाद करता नज़र आता है। काग़ज़ी पैरहन (काग़ज़ का लिबास) : एक प्राचीन परम्परा के अनुसार ईरान में बादशाह के सामने फ़रियादी काग़ज़ का लिबास पहनकर आते थे। 3. घोर परिश्रम, 4. दूध की नदी लाना (असम्भव काम करना), 5. शे'र का अर्थ समझने की शक्ति, 6. सुनने का जाल 7. अर्थ, 8. एक कल्पित पक्षी का नाम, अर्थात् जो न देखा जा सकता है न हाथ आ सकता है, 9. बात (मिर्ज़ा ग़ालिब पर चूंकि यह आरोप लगाया जाता था कि वे निरर्थक शे'र कहते हैं इसलिए मिर्ज़ा फ़रमाते हैं कि बुद्धि चाहे जितना प्रयत्न करे, हमारी बात न समझ पाएगी, यानी अज्ञानी लोग हमारी बात क्या समझेंगे?)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जुज़ क़ैस[1] और कोई न आया बरूए-कार[2]।
सहरा मगर ब-तंगी-ए-चश्मे-हसूद था[3]।।
था ख़्वाब में ख़याल को तुझ से मुआमला।
जब आंख खुल गई न ज़ियां था न सूद[4] था।।
ढांपा कफ़न ने दाग़े-अयूबे-बिरहनगी।
मैं वर्ना हर लिबास में नंगे-वजूद था[5]।।

✣ ✣ ✣

कहते हो न देंगे हम दिल अगर पड़ा पाया।
दिल कहां कि गुम कीजे, हमने मुद्दआ पाया।।
इश्क़ से तबीयत ने ज़ीस्त[6] का मज़ा पाया।
दर्द की दवा पाई, दर्दे-लादवा[7] पाया।।
सादगी-ओ-पुरकारी, बेखुदी-ओ-हुशियारी।
हुस्न को तग़ाफुल[8] में जुर्रत-आज़मा[9] पाया।।
गुंचाः[10] फिर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल।
ख़ूं किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया।।

✣ ✣ ✣

---

1. मजनूं के सिवाय, 2. इश्क़ के मैदान में (छाती तान कर), 3. शायद इसका कारण यह हो कि इश्क़ का मैदान (मरुस्थल) ईर्ष्यालु की-सी-तंग-दृष्टि रखता था, 4. लाभ, 5. मृत्यु ने इस नग्न-जीवन के दोषों को ढांप लिया अन्यथा मेरा हर लिबास अस्तित्व के लिए लज्जा जुटाता था, 6. जीवन, 7. ऐसा दर्द जिसका कोई इलाज नहीं, 8. बेपरवाही, 9. साहसशील (चालाक), 10. कली (दिल की कली से उपमा दी है और कहा है कि पतझड़ में हमारा दिल ख़ून होकर बह गया था और खो गया था, बसन्त ऋतु आ जाने से कली खिलने लगी तो हम यह समझे कि यह हमारा ही वह दिल है जो आज कली का रूप धारण करके लौट रहा है।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाले-दिल नहीं मालूम लेकिन इस क़दर यानी।
हमने बारहा ढूँढा, तुम ने बारहा पाया।।
शोरे-पंदे-नासेह ने[1] ज़ख़्म पर नमक छिड़का।
आप से कोई पूछे, तुमने क्या मज़ा पाया।।

✣ ✣ ✣

दिल में ज़ौक़े-वस्लो-यादे-यार[2] तक बाक़ी नहीं।
आग इस घर में लगी ऐसी कि जो था जल गया।।
अर्ज़ कीजे जौहरे-अंदेशा की गर्मी कहाँ ?
कुछ ख़याल आया था वहशत का कि सहरा जल गया[3] ।।
दिल नहीं, तुझको दिखाता वर्ना दाग़ों की बहार।
इस चिराग़ां[4] का करूँ क्या कारेफ़र्मा[5] जल गया।।
मैं हूँ और अफ़सुर्दगी[6] की आरज़ू 'ग़ालिब' कि दिल।
देखकर तर्ज़े-तपाके-अहले-दुनिया[7] जल गया।।

✣ ✣ ✣

---

1. उपदेशक के शोर ने, 2. मिलने की इच्छा और प्रेमिका की याद, 3. अपने विचारों की गर्मी का वर्णन कहाँ जाकर करूँ, मरुस्थल में जाने के बारे में मात्र सोचा ही था कि उस गर्मी के प्रभाव से वह भी जल गया, अर्थात् अज्ञानियों के सामने अपने उच्च विचार कैसे प्रकट करूँ ? 4. दीपमाला, 5. ज्योति जुटाने वाला, अर्थात् दिल, 6. उदासी, 7. संसार वालों के प्रेम (कृपाओं) के ढंग को देखकर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शौक़ हर रंग रक़ीबे-सरो-सामाँ निकला।
क़ैस तस्वीर के पर्दे में भी उरियाँ निकला[1]।।
ज़ख़्म ने दान न दी तंगी-ए-दिल[2] की यारब।
तीर भी सीना-ए-बिसमिल[3] से पर अफ़्शाँ[4] निकला।।
बू-ए-गुल[5] नाला-ए-दिल[6] दूदे चिराग़े-महफ़िल[7]।
जो तेरी बज़्म से निकला सो परीशां निकला।।
दिल में फिर गिरया[8] ने इक शोर उठाया 'ग़ालिब'।
आह जो क़तरा न निकला था सो तूफ़ां निकला।।

✣ ✣ ✣

था ज़िंदगी में मौत का खटका लगा हुआ।
उड़ने से पेश्तर[9] भी मेरा रंग ज़र्द था।।
जाती है कोई कशमकश अंदोहे-इश्क़ की[10]।
दिल भी अगर गया तो वहीं दिल का दर्द था।।
अहबाब चारासाज़ी-ए-वहशत न कर सके[11]।
ज़िंदां[12] में भी ख़याले-बयाबां-नवर्द था[13]।।

---

1. इश्क़ हर प्रकार की सज्जा और शृंगार का शत्रु होता है। चित्र में होने पर भी मजनूँ (आशिक) नग्न दिखाई देता है। 2. दिल के घाव ने मेरे दिल के सीमित स्थान का लिहाज़ न किया। 3. घायल की छाती, 4. खुले पैरों के साथ, 5. फूल की सुगंधि, 6. आर्तनाद, 7. महफ़िल के चिराग़ का धुआँ, 8. आर्तनाद, 9. पूर्व, 10. प्रेम के दुःखों की, 11. मित्र मेरे प्रेमोन्माद का इलाज न कर सके। 12. कारागार, 13. जंगलों में घूम रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये लाशे-बेकफ़न 'असदे'-ख़स्ताजां की है।
हक़ मग़फ़रत[1] करे अजब आज़ाद मर्द था।।

✢ ✢ ✢

दहर में नक़्शे-वफ़ा वजहे-तसल्ली न हुआ।
है ये वो लफ़्ज़ कि शरमिंदा-ए-मानी न हुआ[2]।।
मैंने चाहा था कि अन्दोहे-वफ़ा से छूटूं[3]।
वो सितमगर मेरे मरने पे भी राज़ी न हुआ।।
हूँ तेरे वादा न करने पे भी राज़ी कि कभी।
गोश मिन्नतकशे-गुलबांगे-तसल्ली न हुआ[4]।।
किससे महरूमी-ए-क़िस्मत[5] की शिकायत कीजे।
हमने चाहा था कि मर जाएं सो वो भी न हुआ।।
मर गया सदमा-ए-यक-जुंबिशे-लब से 'ग़ालिब'।
नातवानी से हरीफ़े-दमे-ईसा न हुआ[6]।।

✢ ✢ ✢

---

1. खुदा बख्शे ! 2. संसार से वफ़ा (प्रेम निभाने की बात) किसी को सन्तुष्ट न कर सकी। यह शब्द ऐसा है जिसका कोई अर्थपूर्ण अर्थ नहीं है, 3. वफ़ा के दुःखों से, 4. मेरे कानों ने तसल्ली देने वाली आवाज़ का उपकार न उठाया। 5. दुर्भाग्य, 6. मसीहा। (फूँक मारकर मुर्दे को ज़िंदा करने वाला) तो मुझे नवजीवन प्रदान करने आया, लेकिन मेरी दुर्बलता देखिए कि अभी उसने फूँक मारने के लिए होंठ हिलाए ही थे कि मैं उसके सदमे से पुनः मर गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिखाऊंगा तमाशा दी अगर फुरसत ज़माने ने।
मेरा हर दाग़े-दिल एक तुख़्म[1] है सर्वे-चिराग़ां[2] का।।
मेरी तामीर[3] में मुज़रिम[4] है एक सूरत ख़राबी की।
हयोला वर्के-ख़िरमन का है ख़ूने-गर्म-दहक़ां का[5]।।
उगा है घर में हरसू सब्ज़ा[6], वीरानी ! तमाशा कर।
मदार[7] अब खोदने पर घास के है मेरे दरबां का।।
ख़मोशी में निहां ख़ूं-गश्ता लाखों आरज़ूएं हैं।
चिराग़े-मुर्दा हूं मैं बेज़बां गोरे-ग़रीबां का[8]।।
बग़ल में ग़ैर की आज आप सोए हैं कहीं वर्ना।
सबब क्या ख़्वाब में आकर तबस्सुमहा ए-पिनहां का[9]।।
नहीं मालूम किस-किस का लहू पानी हुआ होगा।
क़यामत है सरश्कालूदा होना[10] तेरी मिज़गां का[11]।।
नज़र में है हमारी जाद-ए-राहे-फ़ना[12] ग़ालिब।
कि ये शीराज़ा है आलम के अज़्ज़ा-ए परीशां का[13]।।

✣ ✣ ✣

---

1. बीज, 2. दीपमाला करने वाला पेड़, 3. निर्माण, 4. निहित, 5. किसान का खून कड़े परिश्रम से जितना गर्म होता है वही गर्मी खलिहान पर गिरने वाली बिजली बन जाती है। 6. चारों ओर घास उगी है। 7. निर्भर, 8. मेरी लाखों आकांक्षाएँ इस प्रकार खून होकर मेरी चुप्पी में निहित हैं, जैसे परदेसियों की क़ब्रों के बुझे हुए चिराग़ों में लाखों आकांक्षाएँ होती हैं, 9. चोरी-चोरी मुस्कराने का, 10. आँसुओं से भीगना, 11. पलकों का, 12. मृत्यु-पथ, 13. यह संसार के बिखरे तत्त्वों को एक लड़ी में पिरोने वाला है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महरम[1] नहीं है तू ही नवाहा-ए-राज़ का[2]।
यां वरना जो हिजाब[3] है, पर्दा है साज़ का।।
तू और सू-ए-ग़ैर नज़रहा-ए-तेज़-तेज़[4]।
मैं और दुख तेरी मिज़ाहा-ए-दराज़ का[5]।।
काविश[6] का दिल करे है तक़ाज़ा कि है हनोज़[7]।
नाखुन पे क़र्ज़ उस गिरहे-नीमबाज़ का[8]।।
ताराजे काविशे-ग़मे-हिज्रां हुआ 'असद'।
सीना कि था दफ़ीना गुहरहा-ए-राज़ का[9]।।

✣ ✣ ✣

मुहब्बत थी चमन से लेकिन अब ये बेदिमाग़ी है।
कि मौजे-बूए-गुल[10] से नाक में आता है दम मेरा।।

✣ ✣ ✣

---

1. भेदी, 2. विश्व के भेदों के नग़मों का, 3. पर्दा, 4. प्रतिद्वन्द्वी पर तेरे प्रेम की तेज़ और गर्म नज़रें पड़ रही हैं। 5. लम्बी पलकों का, 6. प्रयत्न, 7. अभी, 8. आधी खुली हुई गिरह का, 9. प्रेम के भेदों के बहुत-से मोतियों का ख़ज़ाना मेरे दिल में बंद था; अफ़सोस, जुदाई के दुःख ने यह खज़ाना लूट लिया, अर्थात् इश्क़ के सब भेद प्रकट कर दिए। 10. फूलों की सुगन्धि की लहर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बक़द्रे-ज़र्फ़ है खाक़ी ख़मारे-तश्नाकामी भी।
जो तू दरिया-ए-मय है तो मैं ख़मयाज़ा हूं साहिल का[1] ।।

✣ ✣ ✣

गरचे हूं दीवाना पर क्यों दोस्त का खाऊं फ़रेब।
आस्तीं में दशना पिनहां[2] हाथ में नश्तर खुला।।
गो न समझूं उसकी बातें गो न पाऊं उसका भेद।
पर ये क्या कम है कि मुझसे वो परी-पैकर[3] खुला।।
है ख़याले हुस्न में हुस्ने-अमल का-सा ख़याल।
खुल्द[4] का इक दर[5] है मेरी गोर[6] के अन्दर खुला।।
मुंह न खुलने पर है वो आलम कि देखा ही नहीं।
ज़ुल्फ़ से बढ़कर निक़ाब उस शोख़ के मुंह पर खुला।।
दर पर रहने को कहा और कह के कैसा फिर गया।
जितने अर्से में मेरा लिपटा हुआ बिस्तर खुला।।

✣ ✣ ✣

---

1. ऐ साक़ी ! प्यासों का खुमार (पीने की इच्छा) भी साहस के अनुसार होता है। यदि तू मदिरा का दरिया है तो मैं उस दरिया का तट हूं, अर्थात् जिस प्रकार तट दरिया को अपनी पकड़ में लेना चाहता है, मैं भी शराब का दरिया पीना चाहता हूँ। 2. कटारी छुपी है, 3. परी-जैसा रूपवान माशूक़, 4. जन्नत, 5. दरवाज़ा, 6. क़ब्र।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों अँधेरी है शबे-ग़म, है बलाओं का नजूल[1]।
आज उधर ही को रहेगा दीदा-ए-अख़्तर[2] खुला।।
क्या रहूं गुरबत[3] में खुश जब हो हवादिस का[4] ये हाल।
नामा[5] लाता है वतन से नामाबर अक्सर खुला।।
उसकी उम्मत[6] में हूं मैं, मेरे रहें क्यों काम बंद।
वास्ते जिस शह के 'ग़ालिब' गुंबदे-बेदर[7] खुला।।

✣ ✣ ✣

एक-एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब।
ख़ूने-जिगर वदीअ़ते-मिज़गाने-यार था[8]।।
गलियों में मेरी लाश को खैंचे फिरे कि मैं।
जां दादहे-हवा-ए-सरे-रहगुज़ार था[9]।।
कम जानते थे हम भी ग़मे-इश्क़ को पर अब।
देखा तो कम हुए पे ग़मे-रोज़गार था[10]।।

✣ ✣ ✣

---

1. बलाएँ टूट रही हैं, 2. सितारे (भाग्य) की आँख, 3. परदेस, 4. विपत्तियों का, 5. पत्र, 6. सम्प्रदाय, 7. आकाश, 8. मेरे जिगर का ख़ून माशूक़ की पलकों की अमानत था, उसे अदा करने के लिए एक-एक बूंद बहा देना पड़ा। 9. माशूक़ के रहगुज़ार की इच्छा में मैंने जान दे दी, अब मेरी लाश को दफ्न न करो, बल्कि गली-गली लिए फिरो—तात्पर्य यह है कि कभी तो मेरी लाश माशूक़ की गली में पहुँच ही जाएगी। 10. कम होने पर भी संसार-भर के गमों के बराबर था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बसके दुशवार है हर काम का आसां होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्सां होना।।
गिरया[1] चाहे है ख़राबी मेरे काशाने की।
दरो-दीवार से टपके है बयाबां होना।।
वाए दीवानगी-ए-शौक़ कि हर दम मुझको।
आप जाना उधर और आप ही हैरां होना।।
की मेरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा।
हाय उस ज़ूदे-पशेमां का पशेमां होना[2]।।
हैफ़[3] उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत 'ग़ालिब।
जिसकी क़िस्मत में हो आशिक़ का गरेबां होना।।

✣ ✣ ✣

दोस्त ग़मख़्वारी में मेरी सअ़ई[4] फ़र्माएंगे क्या ?
ज़ख़्म के भरने तलक नाखुन न बढ़ आएंगे क्या ?
बेनियाज़ी[5] हद से गुज़री बंदापरवर कब तलक !
हम कहेंगे हाले-दिल और आप फ़र्माएंगे क्या ?
हज़रते-नासेह गर आएं दीदा-ओ-दिल फ़र्शे-राह[6]।
कोई मुझको ये तो समझा दे कि समझाएंगे क्या ?
आज वां तेग़ो-कफ़न[7] बांधे हुए जाता हूं मैं।
उज्र[8] मेरे क़त्ल करने में वो अब लाएंगे क्या ?

---

1. आर्तनाद, 2. शीघ्र लज्जित हो जाने वाले का लज्जित होना, 3. अफसोस, 4. प्रयत्न (सहायता), 5. विमुखता, 6. उपदेशक यदि आएँगे, हम उनके रास्ते में दिल और आँखें बिछा देंगे। 7. तलवार और कफ़न, 8. आपत्ति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गर किया नासेह ने हमको कैद अच्छा यूँ सही।
ये जुनूने-इश्क़[1] के अन्दाज़ छुट जाएँगे क्या ?
ख़ानाज़ादे-जुल्फ़ हैं[2] ज़ंजीर से भागेंगे क्यों ?
हैं गिरफ़्तारे-वफ़ा ज़िंदा[3] से घबराएंगे क्या ?
है अब इस मामूर[4] में क़हते-ग़मे-उलफ़त[5] 'असद' ?
हमने ये माना कि दिल्ली में रहें, खाएंगे क्या ?

✣ ✣ ✣

ये न थी हमारी क़िस्मत कि विसाले-यार[6] होता।
अगर और जीते रहते यही इन्तिज़ार होता।।
तेरे वादे पे जिए हम तो ये जान, झूट जाना।
कि खुशी से मर न जाते अगर एतबार होता।।
तेरी नाजुकी से जाना कि बंधा था अहद[7] बोदा।
कभी तू न तोड़ सकता अगर उस्तवार[8] होता।।
कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे-नीमकश को[9]।
ये ख़लिश[10] कहां से होती जो जिगर के पार होता।।
ये कहां की दोस्ती है कि बने हैं दोस्त नासेह[11]।
कोई चारासाज़[12] होता, कोई ग़मगुसार[13] होता।।
रगे-संग[14] से टपकता वो लहू कि फिर न थमता।
जिसे ग़म समझ रहे हो ये अगर शरार[15] होता।।

---

1. प्रेमोन्माद, 2. माशूक़ के केशों के बन्दी हैं। 3. कारागार, 4. बस्ती, 5. प्रेम के दुःखों का अकाल, 6. माशूक़ से मिलाप, 7. वचन, 8. सुदृढ़, 9. ऐसा तीर जो आधी शक्ति से चलाया गया हो, 10. वेदना, 11. उपदेशक, 12. उपचारक, 13. हितैषी, 14. पत्थर की नाड़ी, 15. चिंगारी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़म अगर्चे जांगुसल है[1] पे कहां बचें कि दिल है।
ग़मे-इश्क़ गर न होता, ग़मे-रोज़गार[2] होता।।
कहूं किससे मैं कि क्या है शबे-ग़म[3] बुरी बला है।
मुझे क्या बुरा था मरना अगर एक बार होता।।
हुए मरके हम जो रुसवा, हुए क्यों न ग़र्क़ेदरिया[4]।
न कभी जनाज़ा उठता न कहीं मज़ार होता।।
ये मसाइले-तसव्वुफ़[5] ये तेरा बयान 'ग़ालिब'।
तुझे हम वली[6] समझते जो न बादह-ख़्वार[7] होता।।

✣ ✣ ✣

हवस को है निशाते-कार क्या-क्या[8] ?
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या ?
नवाज़िश-हाए-बेजा[9] देखता हूँ।
शिकायत-हाए-रंगीं[10] का गिला क्या ?
बला-ए-जां[11] है 'ग़ालिब' उसकी हर बात।
इबारत[12] क्या, इशारत[13] क्या, अदा क्या ?

✣ ✣ ✣

---

1. जान को समाप्त करने वाला, 2. सांसारिक ग़म, 3. ग़म (बिछोह) की रात, 4. दरिया में क्यों न डूब गए ! 5. दर्शन सम्बन्धी समस्याएँ, 6. सिद्ध, अवतार, 7. मद्यप, 8. आकांक्षा को काम करने की क्या-क्या उमंगें हैं ? 9. (प्रतिद्वन्द्वी पर) व्यर्थ की कृपाओं को, 10. उन कृपाओं की शिकायत का, 11. जान का रोग, 12. वर्णन, 13. इशारे।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरखुरे-क़हरो-ग़ज़ब[1] जब कोई हम-सा न हुआ।
फिर ग़लत क्या है कि हम-सा कोई पैदा न हुआ।।
बंदगी[2] में भी वो आज़ाद-ओ-खुदबीं[3] हैं कि हम।
उलटे फिर आयें दरे-काबा[4] अगर वा[5] न हुआ।।
कम नहीं नाज़िशे-हमताई-ए-चश्मे-ख़ूबां[6]।
तेरा बीमार बुरा क्या है गर अच्छा न हुआ।।
सीने का दाग़ है वह नाला[7] कि लब[8] तक न गया।
ख़ाक का रिज़्क़[9] है वो क़तरा कि दरिया न हुआ।।
हर बुने-मू से दमे-ज़िक्र न टपके ख़ूंनाब[10]।
हमज़ा[11] का क़िस्सा हुआ इश्क़ का चर्चा न हुआ।।
क़तरा में दजला[12] दिखाई न दे और जुज़्व में कुल[13]।
खेल लड़कों का हुआ दीदा-ए-बीना[14] न हुआ।।
थी ख़बर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुर्ज़े।
देखने हम भी गये थे पै तमाशा न हुआ।।

✣ ✣ ✣

---

1. प्रकोप का सज़ावार, 2. भक्ति, 3. स्वतन्त्र और गर्वी, 4. काबे का दरवाज़ा, 5. खुला, 6. हसीनों की आँख (जो बीमार की आँख की तरह आधी बंद आधी खुली रहती है) की तरह मैं भी बीमार हूँ। हमनामी का यह गौरव भी कम नहीं। 7. आर्तनाद, 8. होंठों, 9. आहार, 10. इश्क़ की चर्चा करते हुए यदि रोएँ-रोएँ से शुद्ध रक्त न टपके, 11. 'अमीर हमज़ा' का किस्सा जिसे लोग मनोरंजन-मात्र के लिए सुनते हैं, 12. एक नदी का नाम (सागर), 13. एक तत्त्व में सकल संसार, 14. पैनी दृष्टि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न हो हुस्ने-तमाशा दोस्त रुसवा बेवफ़ाई का।
ब-मुहरे-सद-नज़र साबित है दावा पारसाई का[1]।।
न मारा जानकर बेजुर्म क़ातिल ! तेरी गरदन पर।
रहा मानिंद-ख़ूने-बेगुनह हक़ आशनाई का[1]।।
वही इक बात है जो यां नफ़स[3] वां नकहते-गुल[1] है।
चमन का जलवा है बाइस मेरी रँगीनवाई[5] का।।
न दे नामे[6] को इतना तूल[7] 'ग़ालिब' मुख़्तसर कर दे।
कि हसरत-संज हूँ अर्ज़े-सितमहए-जुदाई का[8]।।

✣ ✣ ✣

ले तो लूं सोते में उसके पाँव का बोसा मगर।
ऐसी बातों से वो काफ़िर बदगुमां हो जाएगा।।
दिल को हम सरफ़े-वफ़ा[9] समझे थे क्या मालूम था।
यानी ये पहले ही नज़्रे-इम्तिहाँ[10] हो जाएगा।।

✣ ✣ ✣

---

1. हुस्न अपना जलवा दिखाने के लिए व्याकुल रहता है और हर जगह अपना जलवा दिखा रहा है, उस पर बेवफाई का आरोप क्यों लगाया जाए जबकि सैकड़ों नज़रें, जो उसे देखने का प्रयत्न करती हैं, उसके आवरणों पर छाप लगा-लगाकर उसके संयमी होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रही हैं। 2. ऐ कातिल, तूने मुझे निरपराधी समझकर क़त्ल न किया हालाँकि मैं तेरे हाथों मरने का इच्छुक था। तूने मित्रता का हक पूरा नहीं किया, इसलिए यह हक़ इस तरह तेरी गरदन पर सवार रहता है जिस तरह किसी निरपराध की हत्या का बोझ। 3. श्वास, 4. फूलों की सुगन्धि, 5. मेरे रंगीन संगीत का कारण, 6. पत्र, 7. विस्तार, 8. जुदाई की पीड़ा को बयान करने की आकांक्षा रखता हूँ, 9. प्रेम-मार्ग का साथी, 10. परीक्षा की भेंट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबके दिल में है जगह तेरी जो तू राज़ी हुआ।
मुझ पे गोया इक ज़माना मेहरबां हो जाएगा।।
बाग़ में मुझको न ले जा वर्ना मेरे हाल पर।
हर गुले-तर एक चश्मे-ख़ूंफिशां हो जाएगा[1]।।
वाए गर मेरा तेरा इन्साफ़ महशर[2] में न हो।
अब तलक तो ये तवक़्क़ो[3] है कि वां हो जाएगा।।
फ़ायदा क्या सोच आख़िर तू भी है दाना[4] 'असद'।
दोस्ती नादां की है जी का ज़ियां[5] हो जाएगा।।

✣ ✣ ✣

दर्द मिन्नत-कशे-दवा न हुआ[6]।
मैं न अच्छा हुआ बुरा न हुआ।।
जमअ़ करते हो क्यों रक़ीबों को।
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ।।
हम कहां क़िस्मत आज़माने जाएं।
तू ही जब ख़ंजर-आज़मा न हुआ[7]।।
कितने शीरीं[8] हैं तेरे लब[9] कि रक़ीब[10]।
गालियां खाके बेमज़ा न हुआ।।
है ख़बर गर्म उनके आने की।
आज ही घर में बोरिया न हुआ।।

---

1. हर फूल खून रोने वाली आँख बन जाएगा (मेरी हालत देखकर), 2. प्रलय का समय, 3. आशा, 4. बुद्धिमान, 5. हानि, 6. पीड़ा ने दवा का उपकार स्वीकार न किया, 7. तूने ही अपने ख़ंजर की काट को न आज़माया। 8. मधुर, 9. होंठ, 10. प्रतिद्वन्द्वी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या वो नमरूद[1] की खुदाई थी।
बंदगी में मेरा भला न हुआ।।
जान दी, दी हुई उसी की थी।
हक़ तो ये है कि हक़ अदा न हुआ।।
ज़ख़्म गर दब गया, लहू न थमा।
काम गर रुक गया रवा[2] न हुआ।।

✣ ✣ ✣

गिला है शौक़ को दिल में भी तंगि-ए-जा का।
गुहर में मह्व हुआ इज़्तिराब दरिया का[3]।।
दिल उसको पहले ही नाज़ो-अदा से दे बैठे।
हमें दिमाग़ कहां[4] हुस्न के तक़ाज़ा का।।
फ़लक[5] को देखके करता हूं उसको याद 'असद'।
जफ़ा में उसकी है अंदाज़ कारफ़र्मा का[6]।।

✣ ✣ ✣

एतिबारे-इश्क़ की ख़ानाख़राबी देखिए।
ग़ैर ने की आह लेकिन वो ख़फ़ा मुझ पर हुआ।

✣ ✣ ✣

---

1. एक बादशाह जो स्वयं को खुदा कहता था, 2. चालू, 3. इश्क़ को अपना उपद्रव दिखाने के लिए इस बात की शिकायत है कि दिल का मैदान छोटा है। यों कहिए कि दरिया का तूफ़ान बनने की बेचैनी मोती में बंद हो गई है। 4. इतनी बुद्धि कहाँ? 5. आकाश, 6. उसके अत्याचारों का ढंग दैवी शक्ति के अत्याचारों का सा है।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं और बज़्मे-मैं[1] से यूं तश्नाकाम[2] जाऊं।
गर मैंने की थी तौबा साक़ी को क्या हुआ था ?
है एक तीर जिसमें दोनों छिदे पड़े हैं।
वो दिन गये कि अपना दिल से जिगर जुदा था।।
दरमांदग़ी[3] में 'ग़ालिब' कुछ बन पड़े तो जानूं।
जब रिश्ता बेगिरह था नाखुन गिरह-कुशा था[4]।।

✣ ✣ ✣

घर हमारा जो न रोते भी तो वीरां होता।
बहर[5] अगर बहर न होता तो बियाबां होता।।
तंगि-ए-दिल[6] का गिला क्या, ये वो काफ़िर दिल है।
कि अगर तंग न होता तो परीशां होता।।

✣ ✣ ✣

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता।
डुबोया मुझको होने ने, न मैं होता तो क्या होता।।
हुआ जब ग़म से यूं बेहिस तो ग़म क्या सर के कटने का।
न होता गर जुदा तन से तो ज़ानू पर धरा होता।
हुई मुद्दत कि 'ग़ालिब' मर गया पर याद आता है।
वो हर एक बात पर कहना कि यूं होता तो क्या होता।।

✣ ✣ ✣

---

1. शराब की महफ़िल, 2. प्यासा, 3. विवशता, 4. जब कोई गांठ गिरह न थी (मुसीबत न थी) हमारे नाख़ून में गिरहें खोलने की शक्ति थी (अब नहीं रही तो मुसीबतें टूट पड़ी हैं)। 5. सागर, 6. दिल की तंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुलबुल के कारोबार पे हैं ख़ंदाहा-ए-गुल[1]।
कहते हैं जिसको इश्क़ ख़लल[2] है दिमाग़ का।।
सौ बार बन्दे-इश्क़[3] से आज़ाद हम हुए।
पर क्या करें कि दिल ही उदू[4] है फ़राग़ का[5]।।

✣ ✣ ✣

वो मेरी चीने-जबीं[6] से ग़मे-पिनहां[7] समझा।
राज़े-मकतूब-ब-बेरब्ती-ए-उनवां समझा[8]।।
शरहे-असबाबे-गिरफ़्तारी-ए-ख़ातिर मत पूछ[9]।
इस क़दर तंग हुआ दिल कि मैं ज़िंदां[10] समझा।।
सफ़रे-इश्क़ में की ज़ोफ़ ने राहत-तलबी[11]।
हर क़दम साये को मैं अपने शबिस्तां समझा[12]।।
दिल दिया जान के क्यों उसको वफ़ादार 'असद'।
ग़लती की कि जो काफ़िर को मुसलमां समझा।।

✣ ✣ ✣

फिर मुझे दीदा-ए-तर[13] याद आया।
दिल जिगर तिश्ना-ए-फ़रियाद आया[14]।।

---

1. बुलबुल के रोने पर फूल हँस रहे हैं, 2. ख़राबी, 3. इश्क़ की पकड़, 4. शत्रु, 5. सुख-सन्तोष का, 6. माथे के बल, 7. निहित दुःख, 8. पते की असम्बद्धता से खत में क्या लिखा है, समझ गया। 9. इश्क़ में जो दुःख उठाये उसका कारण (व्याख्या) मत पूछ। 10. कारागार, 11. निर्बलता ने आराम की इच्छा की। 12. साथ चलने वाली अपनी परछाईं को मैं शयनागार समझा। 13. भीगी हुई आँख, 14. दिल और जिगर को फ़र्याद का इच्छुक देखकर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दम लिया था न क़यामत ने हनोज़[1]।
फिर तेरा वक़्ते-सफ़र याद आया।।
ज़िंदगी यूं भी गुज़र ही जाती।
क्यों तेरा राहगुज़र[2] याद आया।।
क्या ही रिज़वां[3] से लड़ाई होगी।
घर तेरा खुल्द[4] में गर याद आया।।
आह वो जुर्रते-फ़रियाद[5] कहां।
दिल से तंग आके जिगर याद आया।
फिर तेरे कूचे को जाता है ख़याल।
दिले-गुमगश्ता[6] मगर याद आया।।
कोई वीरानी सी वीरानी है।
दश्त[7] को देख के घर याद आया।।
मैंने मजनूं पे लड़कपन में 'असद'।
संग[8] उठाया था कि सर याद आया।।

✣ ✣ ✣

हुई ताख़ीर[9] तो कुछ बाइसे-ताख़ीर[10] भी था।
आप आते थे मगर कोई इनागीर[11] भी था।।
तुमसे बेजा है मुझे अपनी तबाही का गिला।
इसमें कुछ शायबा-ए-खूबि-ए-तकदीर[12] भी था।।

---

1. अभी, 2. पथ, 3. स्वर्ग का दरबार, 4. स्वर्ग, 5. फर्याद करने का साहस, 6. खोया हुआ दिल, 7. जंगल, 8. पत्थर (इस शेर का भावार्थ यह है कि मैं बचपन ही से आशिक़-मिज़ाज हूँ), 9. देर, 10. देर का कारण, 11. रोकने वाला, 12. भाग्य का हाथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़ैद में है तेरे वहशी को वही ज़ुल्फ़ की याद।
हां कुछ इक रंजे-गिरांबारी-ए-ज़ंजीर[1] भी था।।
यूसुफ़[2] उसको कहूं और कुछ न कहे, ख़ैर हुई।
गर बिगड़ बैठे तो में लायके़-ताज़ीर[3] भी था।
हम थे मरने को खड़े पास न आया न सही।
आख़िर उस शोख़ के तरकश में कोई तीर भी था ?
पकड़े जाते हैं फरिश्तों के लिखे पर नाहक़।
आदमी कोई हमारा दमे-तहरीर[4] भी था ?
रेख़ते[5] के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'।
कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर'[6] भी था।।

✣ ✣ ✣

तू दोस्त किसी का भी सितमगर न हुआ था।
औरों पे है वो ज़ुल्म कि मुझ पर न हुआ था।।

---

1. बोझिल ज़ंजीर का दुःख (ज़ुल्फ़ के सम्बन्ध से ज़ंजीर का जिक्र आया है।) 2. बहुत सुन्दर (ज़ुलेख़ा ने यूसुफ़ को बाज़ार से एक दास के रूप में खरीदा था—यहाँ उसी ओर संकेत है कि मैंने उसे दास कह दिया।), 3. दंड के योग्य, 4. (दण्ड की आज्ञा) लिखते समय, 5. उर्दू भाषा का पुराना नाम, 6. एक प्रसिद्ध उर्दू शायर।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोड़ा महे-नख़शब की तरह दस्ते-कज़ा ने।
खुरशीद हनोज़ उसके बराबर न हुआ था[1]।।

✣ ✣ ✣

आईना देख अपना सा मुंह ले के रह गये।
साहब को दिल न देने पे कितना ग़रूर था।।
क़ासिद को अपने हाथ से गरदन न मारिये।
उसकी ख़ता नहीं थी ये मेरा कुसूर था।।

✣ ✣ ✣

अर्ज़े-नियाज़े-इश्क़ के काबिल[2] नहीं रहा।
जिस दिल पे मुझको नाज़ था वो दिल नहीं रहा।।
मरने की ऐ दिल ! और ही तदवीर कर कि मैं।
शायाने-दस्तो-बाजुए-कातिल[3] नहीं रहा।।
गो मैं रहा रहीने-सितमहा - ए-रोज़गार[4]।
लेकिन तेरे ख़याल से ग़ाफिल नहीं रहा।।
बेदादे-इश्क़ से नहीं डरता मगर 'असद'।
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा।।

---

1. एक बनावटी चाँद का नाम जो कुएँ से उभरकर चारों ओर प्रकाश फैलाता था, लेकिन उसका प्रकाश अधिक दूर न जाता था। 'ग़ालिब' फ़र्माते हैं कि सृष्टि तथा नाश करने वाले हाथ ने सूरज को बनाना शुरू किया लेकिन उसका प्रकाश तेरे सौन्दर्य के प्रकाश के बराबर न हुआ था कि उसे बनाना छोड़ दिया और वह 'महे-नख़शब' की तरह अधूरा रह गया। 2. इश्क़ की सेवा करने योग्य, 3. क़ातिल (माशूक़) के हाथ और बाँह (से मरने) के क़ाबिल, 4. संसार के दुःख झेलता रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़िक्र उस परीवश[1] का और फिर बयाँ अपना।
बन गया रक़ीब[2] आख़िर था जो राज़दां[3] अपना।।
मय वो क्यों बहुत पीते बज़्मे-ग़ैर में यारब।
आज ही हुआ मन्जूर उनको इम्तिहां अपना।।
मंज़र[4] इक बुलंदी पर और हम बना सकते।
अर्श[5] से इधर होता काश कि मकां अपना।।
दे वो जिस क़दर ज़िल्लत हम हंसी में टालेंगे।
बारे आशना निकला उनका पासबां अपना[6]।।
दर्दे-दिल लिखूं कब तक, जाऊं उनको दिखलाऊं।
उंगलियां फ़िगार[7] अपनी ख़ामा ख़ूंचकां[8] अपना।।
घिसते-घिसते मिट जाता आपने अबस बदला।
नंगे-सिजदा से मेरे संगे-आस्तां अपना[9]।।
ता करे न ग़म्माजी[10], कर लिया है दुश्मन को।
दोस्त की शिकायत में हमने हमज़बां अपना।।
हम कहां के दाना[11] थे किस हुनर में यकता थे।
बेसबब हुआ 'ग़ालिब' दुश्मन आस्मां अपना।।

---

1. परी जैसा सौन्दर्य रखने वाला माशूक़, 2. प्रतिद्वन्द्वी, 3. भेदी, 4. दृश्य, 5. आठवाँ आकाश (सबसे ऊँचा स्थान), 6. संयोग से उनका चौकीदार हमारा परिचित निकला। 7. घायल, 8. खून टपकता हुआ कलम, 9. मेरे बार-बार माथा टेकने से आपकी दहलीज़ का पत्थर स्वयं ही घिस जाता, आपने व्यर्थ में उसे बदला। 10. चुग़ली न खाए इसलिए, 11. बुद्धिमान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहमत अगर क़बूल करे क्या बईद है।
शरमिंदगी से उज़्र न करना गुनाह का[1]।।
मक़्तल को किस निशात से जाता हूँ मैं कि है।
पुर-गुल ख़याले-ज़ख़्म से दामन निगाह का[2]।।

✣ ✣ ✣

जौर[3] से बाज़ आएं पर बाज़ आएं क्या ?
कहते हैं हम तुझको मुंह दिखलाएं क्या।।
रात-दिन गर्दिश में है सात आस्मां।
हो रहेगा कुछ न कुछ घबराएं क्या।।
लाग हो तो उसको हम समझें लगाव।
जब न हो कुछ भी तो धोखा खाएं क्या ?
हो लिए क्यों नामाबर के साथ-साथ।
या रब अपने ख़त को हम पहुंचाएं क्या ?
उम्र भर देखा किए मरने की राह।
मर गए पर देखिए दिखलाएं क्या ?
पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है।
कोई बतलाओ कि हम बतलाएं क्या ?

✣ ✣ ✣

1. पापों की लज्जा से यदि पापों का कोई कारण प्रस्तुत न करूँ तो असम्भव नहीं कि कृपानिधान उस लज्जा को पर्याप्त समझकर मुझे क्षमा कर दे। 2. वधस्थान में जो घाव आएँगे उनके विचार मात्र से मेरी नज़र का दामन फूलों से भर गया है इसलिए मैं बहुत प्रसन्नता से वधस्थान की ओर जा रहा हूँ (माशूम के हाथों मरने)। 3. जुल्म।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इशरते-क़तरा है[1] दरिया में फ़ना हो जाना।
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना।।
तुझसे क़िस्मत में मेरी सूरते-कुफ़्ले-अबजद[2]।
था लिखा बात के बनते ही जुदा हो जाना।।
अब जफ़ा से भी हैं महरूम हम अल्ला-अल्ला।
इस क़दर दुश्मने-अरबाबे-वफ़ा हो जाना[3]।।
ज़ोफ़ से गिरया मुबद्दल बदमे-सर्द हुआ।
बावर आया हमें पानी का हवा हो जाना[4]।।
है मुझे अब्रे-बहारी[5] का बरस कर खुलना।
रोते-रोते ग़मे-फुरक़त में[6] फ़ना हो जाना।।
बख़्शे है जलवा-ए-गुल ज़ौक़े-तमाशा 'ग़ालिब'।
चश्म को चाहिए हर रंग में वा हो जाना[7]।।

---

1. बूंद की सफलता (सुख) इसी में है, 2. एक ऐसे ताले की तरह जिसमें 'क', 'ख' आदि अक्षर खुदे होते हैं। उन अक्षरों को एक खास क्रम से मिलाकर एक शब्द बनाएँ तो ताला खुल जाता है। 3. वफ़ादारों के ऐसे शत्रु हो गए कि अब उन्हें अपने अत्याचार के भी योग्य नहीं समझते। 5. दुर्बलता के कारण हम रो भी नहीं सकते, इसलिए हमारा रोना ठंडी आहों में परिवर्तित हो गया है। ऐसा हो जाने से हमें विश्वास हो गया कि तत्त्व अपना रूप बदल देते हैं, पानी हवा में तबदील हो सकता है,। 5. बसन्त-ऋतु का बादल, 6. बिछोह के ग़म में, 7. फूलों की बहार सबको सैर करने का निमंत्रण देती है, यहाँ तक कि स्वयं फूल आँख बनकर वे सुन्दर दृश्य देखता है। इसलिए परख रखने वाली आँख को चाहिए कि हर समय खुली रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रदीफ़ 'ते' (त)

ऐ दिले-ना- आक़बत-अंदेश ज़ब्ते-शौक़ कर।
कौन ला सकता है ताबे-जलवा-ए-दीदारे-दोस्त[1]।।
इश्क़ में बेदादे-रश्के-ग़ैर ने[2] मारा मुझे।
कुश्ता-ए-दुश्मन हूं आख़िर गरचे था बीमारे-दोस्त[3]।।
ग़ैर यूं करता है मेरी पुरसिश[4] उसके हिज्र[5] में।
बेतकल्लुफ़ दोस्त हो जैसे कोई ग़मख़्वारे दोस्त।।
ताकि मैं जानूं कि है उसकी रसाई वां तलक।
मुझको देता है पयामे-वादा-ए-दीदारे-दोस्त[6]।।
चुपके-चुपके मुझको रोते देख पाता है अगर।
हँस के करता है बयाने-शोख़ी-ए-गुफ़्तारे-दोस्त[7]।।

---

1. ऐ परिणाम न सोचने वाले दिल ! सब्र कर। यार के जलवे को कोई सहन नहीं कर सकता। 2. प्रतिद्वन्द्वी पर की जाने वाली कृपाओं के प्रति मेरी ईर्ष्या ने, 3. मैं यद्यपि माशूक़ के प्रेम का रोगी था लेकिन मरा शत्रु के हाथों। 4. पूछताछ, 5. विछोह, 6. माशूक़ के दर्शन देने के वायदे का संदेश, 7. माशूक़ की शोख़ी-भरी बातों की चर्चा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रदीफ़ 'जीम' (ज)

लो हम मरीज़े-इश्क़ के तीमारदार हैं।
अच्छा अगर न हो तो मसीहा का क्या इलाज़[1] ?

✣ ✣ ✣

रदीफ़ 'दाल' (द)

हुस्न ग़मज़े की कशाकश से छुटा मेरे बाद।
बारे आराम से हैं अहले-जफ़ा मेरे बाद[2]।।
शमअ़ बुझती है तो उसमें से धुआं उठता है।
शोला-ए-इश्क़ सियहपोश हुआ[3] मेरे बाद।।
ख़ूं है दिल ख़ाक में अहवाले-बुतां पर यानी।
उनके नाख़ून हुए मुहताजे-हिना मेरे बाद[4]।।

---

1. चिकित्सक को क्या दण्ड मिलेगा ? 2. जब तक मैं जीवित था वे मुझे मोहित करने के लिए हर समय भ्रू-विलास का अभ्यास करते रहते थे। यह अच्छा हुआ कि मेरे मरने के बाद उन्हें इस अभ्यास (के कष्ट से) मुक्ति मिल गई। 3. इश्क़ के शोले ने काला मातमी लिबास ओढ़ लिया। 4. जब मैं जीवित था तो वे मेरे ख़ून के रंग को मेहंदी के रंग से अधिक शोख़ समझकर उससे हाथ रँगा करते थे। अब मरने के बाद मुझे यह दुःख खाए जाता है और इसी दुःख से मिट्टी के नीचे मेरा दिल ख़ून हो रहा है कि अब उनके नाख़ून मेंहदी के आश्रित हो गए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़म से मरता हूं कि इतना नहीं दुनिया में कोई।
कि करे ताज़ियते-मेहरो-वफ़ा[1] मेरे बाद।।
आए है बेकसी-ए-इश्क़[2] पे रोना 'ग़ालिब'।
किसके घर जाएगा सैलाबे-बला[3] मेरे बाद ?

✣ ✣ ✣

रदीफ़ 'रे' (र)

नज़र में खटके है बिन तेरे घर की आबादी।
हमेशा रोते हैं हम देख कर दरो-दीवार[4]।।

✣ ✣ ✣

घर जब बना लिया तेरे दर पर कहे बग़ैर।
जानेगा अब भी तू न मेरा घर कहे बग़ैर।।
कहते हैं जब रही न मुझे ताक़ते-सुख़न[5]।
जानूं किसी के दिल की मैं क्यों कर कहे बग़ैर।।
काम उससे आ पड़ा है कि जिसका जहान में।
लेवे न कोई नाम सितमगर कहे बग़ैर।।
जी में ही कुछ नहीं है हमारे, वगरना हम।
सर जाए या रहे, न रहें पर कहे बग़ैर।।

---

1. प्रेम और प्रेम निभाने का शोक प्रकट करे, अर्थात् प्रेम और प्रेम निभाना मेरे साथ समाप्त हो गया। 2. इश्क़ की विवशता, 3. इश्क़-जैसी बला की बाढ़, 4. दरवाज़े, दीवारें, 5. वाक्-शक्ति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation.Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोड़ूँगा मैं न उस बुते-काफ़िर का पूजना।
छोड़े न ख़ल्क़[1] गो मुझे काफ़िर कहे बग़ैर।।
मक़सद है नाज़ो-ग़मज़ा वले गुफ़्तगू में काम।
चलता नहीं है दशना-ओ-ख़ंजर कहे बग़ैर[2]।।
हरचंद हो मुशाहिदा-ए-हक़[3] की गुफ़्तगू।
बनती नहीं है बादा-ओ-साग़र[4] कहे बग़ैर।।
बहरा हूं मैं तो चाहिए दूना हो इल्तफ़ात[5]।
सुनता नहीं हूं बात मुकर्रर[6] कहे बग़ैर।।
'ग़ालिब' न कर हुज़ूर में तू बार-बार अर्ज़।
ज़ाहिर है तेरा हाल सब उन पर कहे बग़ैर।।

✣ ✣ ✣

क्यों जल गया न ताबे-रुख़े-यार[7] देखकर।
जलता हूं अपनी ताक़ते-दीदार[8] देखकर।।
आतिश-परस्त[9] कहते हैं अहले-जहां[10] मुझे।
सरगर्म नालाहा- ए-शररबार देखकर[11]।।
क्या आबरू-ए-इश्क़ जहां आम हो जफ़ा।
रुकता हूं तुमको बेसबब आज़ार[12] देखकर।।

---

1. संसार, 2. तात्पर्य तो भ्रू-विलास से है लेकिन बातचीत में उसे 'ख़ंजर' कहे बिना बात नहीं बनती। 3. यथार्थ, 4. मदिरा और प्याला, 5. कृपा (प्रेम), 6. दोबारा, 7. माशूक़ के चेहरे की दीप्ति, 8. देखने की शक्ति, 9. आग का पुजारी, 10. संसार वाले, 11. हर समय आग बरसाने वाला मेरा आर्तनाद देखकर, 12. बिना कारण सताने वाला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आता है मेरे क़त्ल को पर जोशे-रश्क से।
मरता हूं उसके हाथ में तलवार देखकर[1]।।
जुन्नार[2] बांध सबहा-ए-सद-दाना[3] तोड़ डाल।
रहरौ[4] चले है राह को हमवार देखकर।।
इन आबलों से[5] पांव के घबरा गया था मैं।
जी खुश हुआ है राह को पुरख़ार[6] देखकर।।
सर फोड़ना वो 'ग़ालिबे'-शोरीदा-हाल. का[7]।
याद आ गया मुझे तेरी दीवार देखकर।।

✣ ✣ ✣

है बसकि हर-इक उनके इशारे में निशां और[8]।
करते हैं मुहब्बत तो गुज़रता है गुमां[9] और।।
यारब वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात।
दे और दिल उनको जो न दे मुझको जबां और।।
तुम शहर में हो तो हमें क्या ग़म ? जब उठेंगे।
ले आएंगे बाज़ार से जाकर दिलो-जाँ और।।
हरचंद सुबक-दस्त हुए बुत-शिकनी में।
हम हैं तो अभी राह में है संगे-गिरां और[10]।।

---

1. वह मेरे क़त्ल को आ रहा है लेकिन मैं इस ईर्ष्या में मरा जा रहा हूँ कि जिस हाथ से उन्होंने तलवार पकड़ रखी है, वह मेरी गरदन में पड़ा होना चाहिए था। 2. जनेऊ, 3. सौ दानों वाली, 4. पथिक, 5. छालों से, 6. कँटीली, 7. पागल 'ग़ालिब' का, 8. चूँकि उनके हर नाज़ में अनोखापन होता है, 9. संदेह, 10. बुतों को तोड़ने में यद्यपि हम निपुण हो चुके हैं किन्तु जब तक मैं हूँ तब तक तो यूँ समझो कि ईश्वरोपासना के मार्ग में एक बहुत बड़ा पत्थर अभी शेष है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है ख़ूने-जिगर जोश में दिल खोल के रोता।
होते जो कई दीदा-ए-ख़ूंनाबा फ़िशां और[1]।।
लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैन।
करता, जो न मरता, कोई दिन आहो-फ़ुग़ां[2] और।।
पाते नहीं जब राह तो चढ़ जाते हैं नाले।
रुकती है मेरी तबअ[3] तो होती है रवां और।।
हैं और भी दुनिया में सुख़नवर[4] बहुत अच्छे।
कहते हैं कि 'ग़ालिब' का है अंदाज़े-बयां और।

✣ ✣ ✣

जुनूं की दस्तगीरी किससे हो गर हो न उरयानी।
गरेबां चाक का हक़ हो गया है मेरी गरदन पर[5]।।
'असद' बिसमिल[6] है किस अंदाज़ का क़ातिल से कहता है।
कि मश्क़े-नाज़ कर ख़ूने-दो-आलम मेरी गरदन पर[7]।।

✣ ✣ ✣

1. ख़ून रोने वाली कई आँख होतीं, 2. आर्तनाद, 3. तबियत, 4. शायर, 5. नग्नता ही से उन्माद की सहायता हो सकती है। मैंने गरेबाँ फाड़ा और नंगा हो गया। फटे हुए गरेबाँ का उपकार मेरी गरदन पर है, क्योंकि उसी के कारण मैं उन्माद की सहायता कर सका। 6. घायल, 7. और निर्भय होकर (अपने नाज़ से) लोगों को मारने का अभ्यास जारी रख। बेशक तू दोनों संसारों के वध का ख़ून मेरी गरदन पर डाल दे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सितमकश मसलहत से हूँ कि ख़ूबां तुझ पे आशिक़ है।
तकल्लुफ़ बरतरफ़ मिल जाएगा तुझ-सा रक़ीब आख़िर[1] ।।

✣ ✣ ✣

*लाजिम[2] था कि देखो मेरा रस्ता कोई दिन और।
तनहा गए क्यों अब रहो तनहा कोई दिन और।।
मिट जाएगा सर गर तेरा पत्थर[3] न घिसेगा।
हूं दर पे तेरे नासियाफ़रसा[4] कोई दिन और।।
आए हो कल और आज ही कहते हो कि जाऊं।
माना कि हमेशा नहीं अच्छा, कोई दिन और।
जाते हुए कहते हो कयामत को मिलेंगे।
क्या ख़ूब ! कयामत का है गोया कोई दिन और।।
तुम माहे-शबे-चारदहम[5] थे मेरे घर के।
फिर क्यों न रहा घर का वो नक्शा कोई दिन और।।
नादां हो जो कहते हो कि क्यों जीते हो 'ग़ालिब'।
क़िस्मत में है मरने की तमन्ना कोई दिन और।

✣ ✣ ✣

---

1. मैं अपने हित ही के लिए तुम्हारे जुल्म सहन कर रहा हूँ क्योंकि बहुत-से हसीन तुझ पर आशिक़ हैं और वे सब मेरे प्रतिद्वन्द्वी हैं। उनमें से कोई मेरा मित्र बन जाएगा और तुझे तुझ-सा सुन्दर प्रतिद्वन्द्वी मिल जाएगा अर्थात् तू नहीं मिलता न सही, तुझ-सा सुन्दर प्रतिद्वन्द्वी तो मिल जाएगा। 2. आवश्यक, 3. कब्र का पत्थर, 4. माथा रगड़ रहा हूँ, 5. पूर्णिमा का चाँद।

* मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ने यह ग़ज़ल अपने प्रिय दत्तक पुत्र 'आरिफ़' के देहांत पर लिखी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रदीफ़ 'ज़े' (ज़)

न गुले-नग़्मा हूं न पर्दा-ए-साज़[1]।
मैं हूं अपनी शिकस्त की आवाज़।।
तू और आराइशे-ख़मे-काकुल।
मैं और अन्देशाहा-ए-दूरो-दराज़[2]।।
हूं गिरफ्तारे-उल्फ़ते-सय्याद।
वरना बाकी है ताक़ते-परवाज़[3]।।

रदीफ़ 'सीन' (स)

मुंद गईं खोलते ही खोलते आंखें है, है।
खूब वक़्त आए तुम इस आशिके-बीमार के पास।।
मैं भी रुक-रुक के न मरता जो जबां के बदले[4]।
दशना इक तेज़ सा होता मेरे ग़मख़्वार के पास[5]।।

---

1. मेरा अस्तित्व कोई साज़ नहीं है जिससे संगीत फूल बन-बनकर निकलता हो। 2. तू हर समय अपने उलझे केश सँवारता रहता है और मुझे यह खटका सता रहा है कि न जाने अब कितने प्रेमियों की भीड़ तेरे चारों ओर एकत्रित हो जाएगी। 3. मैं शिकारी (सांसारिक संबंध) के प्रेम में ग्रस्त हूँ इसलिए उड़ना नहीं चाहता, यों मुझमें उड़ने की शक्ति अभी मौजूद है, 4. ज़बाँ के बदले—उपदेशों की भरमार के बदले, 5. इससे अच्छा था कि मेरे शुभचिन्तक के पास एक छुरी होती, जिससे वह एकदम मुझे मार डालता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दहने-शेर[1] में जा बैठिए लेकिन ऐ दिल।
न खड़े हूजिए खूबाने-दिल-आज़ार के पास[2]।।
मर गया फोड़ के सर 'ग़ालिबे'-वहशी है, है।
बैठना उसका वो आकर तेरी दीवार के पास।।

रदीफ़ 'काफ़' (क)

मुझको अरज़ानी रहे तुझको मुबारिक हूजियो।
नाला-ए-बुलबुल का दर्द और ख़ंदा-ए-गुल का नमक[3]।।
दाद देता है मेरे जख़्मे-जिगर की वाह, वाह।
याद करता मुझे देखे है वो जिस जा नमक[4]।।
याद हैं वो दिन तुझे 'ग़ालिब' कि वजदे-ज़ौक[5] में।
जख़्म से गिरता तो मैं पलकों से चुनता था नमक।।

---

1. शेर के मुँह में, 2. दिल दुखाने वाले हसीनों के पास, 3. ऐ मित्र, मुझे बुलबुल का आर्तनाद प्राप्त होता रहे और तुझे फूलों की नमकीन (सुन्दर) हँसी (माशूक की उपेक्षा पर व्यंग्य है)। 4. याद करने का कारण यह है कि वह सदैव मेरे घावों पर नमक छिड़कता रहा है। 5. प्रेमोन्माद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक।
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक[1]।।
दामे हर मौज में है, हल्का-ए-सदकामे-नहंग।
देखें क्या गुज़रे है, कतरे पे गुहर होने तक[2]।।
आशिकी सब्र-तलब और तमन्ना बेताब।
दिल का क्या रंग करूं ख़ूने-जिगर होने तक[3]।।
हमने माना कि तग़ाफुल[4] न करोगे लेकिन।
ख़ाक हो जाएंगे हम तुमको ख़बर होने तक।।
ग़मे-हस्ती का 'असद' किससे हो जुज़ मर्ग[5] इलाज।
शमअ़ हर रंग में जलती है सहर[6] होने तक।।

रदीफ़ 'गाफ़' (ग)

आता है दाग़े-हसरते-दिल का शुमार याद[7]।
मुझसे मेरे गुनह का हिसाब ऐ खुदा न मांग।।

---

1. सुलझने तक, 2. हर लहर एक जाल है और उस जाल के फंदे बहुत-से मगरों की तरह मुँह खोले हुए हैं। देखें मोती बनने तक एक बूँद पर क्या-क्या विपत्तियाँ टूटती हैं। 3. इश्क़ में धैर्य से ही सफलता मिल सकती है, किन्तु इच्छा कहती है कि तुरन्त सफलता हो जाए। जिगर के ख़ून होने अर्थात् मृत्यु होने तक दिल को किस तरह संभालूँ ? 4. उपेक्षा, 5. मृत्यु के अतिरिक्त, 6. सुबह, 7. मन में जितनी भी पाप-युक्त आकांक्षाओं ने जन्म लिया वे पूर्ण न हुईं, वे सब हसरतों का रूप धारण कर गईं। उनकी संख्या मुझे याद आती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रदीफ़ 'मीम' (म)

मुझको दयारे-ग़ैर[1] में मारा वतन से दूर।
रख ली मेरे खुदा ने मेरी बेकसी की शर्म।

रदीफ़ 'नून' (न)

वो फ़िराक़[2] और वो विसाल[3] कहां ?
वो शबो-रोज़ो-माहो-साल[4] कहां ?
थी वो इक शख़्स के तसव्वुर[5] से।
अब वो रअ़नाई-ए-ख़याल[6] कहां ?
ऐसा आसां नहीं लहू रोना।
दिल में ताक़त जिगर में हाल[7] कहां ?
हमसे छूटा क़िमारख़ाना-ए-इश्क़[8]।
वां जो जायें गिरह में माल कहां ?
फ़िक्रे दुनिया[9] में सर खपाता हूं।
मैं कहां और ये बवाल कहां ?

1. परदेश, 2. बिछोह, 3. मिलन, 4. रात, दिन, महीने, साल, 5. कल्पना, 6. विचारों की सुन्दरता, 7. हालत, शक्ति, 8. इश्क़ का जुआख़ाना, 9. संसार की चिन्ताएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की वफ़ा हमसे तो ग़ैर उसको जफ़ा कहते हैं।
होती आई है कि अच्छों को बुरा कहते हैं।।
आज हम अपनी परीशानी-ए-ख़ातिर[1] उनसे।
कहने जाते तो हैं पर देखिए क्या कहते हैं।।
अगले वक़्तों के हैं ये लोग इन्हें कुछ न कहो।
जो मै-ओ-नग़्मा को अंदोह-रुबा कहते हैं[2]।।
है परे सरहदे-इदराक से अपना मसजूद।
क़िबला को अहले-नज़र क़िबलानुमा कहते हैं[3]।।
इक शरर[4] दिल में है, उससे कोई घबराएगा क्या ?
आग मतलूब[5] है हमको जो हवा कहते हैं।।
देखिए लाती है उस शोख़ की नख़वत[6] क्या रंग ?
उसकी हर बात पे हम नामे-खुदा[7] कहते हैं।।

✣ ✣ ✣

आबरू क्या ख़ाक उस गुल की जो गुलशन में नहीं।
है गिरेबां नंगे-पैराहन जो दामन में नहीं[8]।।

---

1. परेशानी, 2. शराब और संगीत को ग़म दूर करने के साधन बताते हैं—भला वास्तविक ग़म इन चीज़ों से कहां दूर हो सकता है ? 3. नमाज़ काबे की ओर मुँह करके पढ़ी जाती है। ग़ालिब कहते हैं कि काबा तो केवल (कम्पास की) सूई-मात्र है जो रास्ता दिखाती है। सिजदे का वास्तविक स्थान तो काबे और बुद्धि से बहुत परे है। 4. चिंगारी, 5. चाहिए, 6. गर्व, 6. सुबहान अल्ला, 8. जो गरेबाँ धज्जी-धज्जी होकर दामन में न आ रहे, वह कुर्ते के लिए एक कलंक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़ोफ़[1] से ऐ गिरया[2] कुछ बाक़ी मेरे तन में नहीं।
रंग होकर उड़ गया जो ख़ूं कि दामन में नहीं।।
रौनक़े-हस्ती है इश्क़े-ख़ाना-वीरां-साज़ से।
अंजुमन बेशमअ़ है गर बर्क़ ख़िरमन में नहीं[3]।।
ज़ख़्म सिलवाने से मुझ पर चाराजोई का है तान[4]।
ग़ैर समझा है कि लज़्ज़त ज़ख़्मे-सोज़न में नहीं[5]।।
हो फ़िशारे-ज़ोफ़ में क्या नातवानी की नमूद[6]।
क़द[7] के झुकने की भी गुंजाइश मेरे तन में नहीं।।

✣ ✣ ✣

ओहदे से मदहे-नाज़ के बाहर न आ सका[8]।
गर इक अदा हो तो उसे अपनी क़ज़ा[9] कहूं।।
ज़ालिम मेरे गुमां[10] से मुझे मुनफ़इल न चाह[11]।
हय, हय, खुदा-नकरदा[12] तुझे बेवफ़ा कहूं।।

✣ ✣ ✣

---

1. कमजोरी, 2. आर्तनाद, 3. संसार में जो चहल-पहल दिखाई देती है वह घर को वीरान बना देने वाले इश्क़ की ही देन है। खलियान में यदि बिजली नहीं (हृदय में यदि प्रेम नहीं) तो वह एक ऐसी सभा है जिसमें दीपक का प्रकाश न हो। 4. इलाज कराने का ताना, 5. वह यह समझता है कि सुई से घाव सिलवाकर मैं इलाज करा रहा हूँ (मैं तो अधिक घाव खाने के लिए सुई से घाव सिलवा रहा हूँ)। 6. शारीरिक दुर्बलता का प्रदर्शन कैसे करूँ ? 7. शरीर, 8. मैं उसकी अदाओं की पूरी प्रशंसा नहीं कर सका। 9. मृत्यु, 10. भ्रम, 11. लज्जित न कर, 12. खुदा न करे !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेहरबां होके बुला लो मुझे चाहे जिस वक़्त।
मैं गया वक़्त नहीं हूं कि फिर कभी आ भी न सकूं।।
ज़ोफ़ में ताना-ए-अग़ियार का शिकवा क्या है[1] !
बात कुछ सर तो नहीं है कि उठा भी न सकूं।।
ज़हर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वरना।
क्या क़सम है तेरे मिलने की कि खा भी न सकूं।।

✣ ✣ ✣

हमसे खुल जाओ बवक़्ते-मय-परस्ती[2] एक दिन।
वरना हम छेड़ेंगे रखके उज़्रे-मस्ती[3] एक दिन।।
ग़र्रा-ए-ओजे-बिनाए-आलमे-इम्कां न हो[4]।
इस बुलंदी के नसीबों में है पस्ती एक दिन।।
क़र्ज़ की पीते थे मय लेकिन समझते थे कि हां।
रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ा-मस्ती एक दिन।।
नग़्मा-हाए-ग़म[5] को भी ऐ दिल ग़नीमत जानिए।
बे-सदा[6] हो जाएगा ये साज़े-हस्ती[7] एक दिन।।
धौल-धप्पा उस सरापा-नाज़ का शेवा न था।
हम ही कर बैठे थे 'ग़ालिब' पेशदस्ती[8] एक दिन।।

✣ ✣ ✣

---

1. मेरी दुर्बलता को देखते हुए प्रतिद्वन्द्वियों के ताने की शिकायत करते क्यों डरते हो ? 2. शराब पीते समय, 3. शराबी होने का बहाना करके, 4. संसार की ऊँची-ऊँची इमारतों (अर्थात् संसार की उन्नति) पर घमंड न कर। 5. दुखों के गीत, 6. बेआवाज़, 7. अस्तित्व का साज़, 8. छेड़छाड़।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम पर जफ़ा से तर्के-वफ़ा का गुमां नहीं।
एक छेड़ है वरना मुराद इम्तिहां नहीं[1]।।
किस मुंह से शुक्र कीजिए इस लुत्फ़े-ख़ास का।
पुरसिश है और पाए-सुख़न दर्मियां नहीं[2]।।
हमको सितम अज़ीज़, सितमगर को हम अज़ीज़।
नामेहरबां नहीं है, अगर मेहरबां नहीं।।
बोसा नहीं, न दीजिए, दुशनाम[3] ही सही।
आख़िर ज़बां तो रखते हो तुम गर दहां नहीं[4]।।
ख़ंजर से चीर सीना अगर दिल न हो दो-नीम[5]।
दिल में छुरी चुभो मिज़ा गर ख़ूंचकां नहीं[6]।।
नुक़्सां नहीं जुनूं में बला से हो घर ख़राब।
सौ गज़ ज़मीं के बदले बियाबां गिरां[7] नहीं।।
कहते हो क्या लिखा है तेरी सरनविश्त[8] में।
गया जबीं[9] पे सिजदा-ए-बुत का[10] निशां नहीं।।
जां है बहाए बोसा वले क्यों कहे अभी।
'ग़ालिब' को जानता है कि वो नीमजां नहीं[11]।।

---

1. उसे यह भ्रम नहीं है कि हम उसके अत्याचारों से तंग आकर उसे प्रेम करना छोड़ देंगे। यह तो केवल छेड़छाड़ है, हमारी परीक्षा नहीं ली जा रही है। 2. मेरा हाल पूछ रहे हैं लेकिन ज़बाँ से नहीं केवल नज़रों से। 3. गाली, 4. मुँह के छोटा होने का वर्णन है। 5. दो टुकड़े 6. पलकें (आँखें) अगर ख़ून नहीं रोतीं तो, 7. महँगा, 8. भाग्य, 9. माथे पर, 10. बुतों के आगे माथा रगड़ने का, 11. चुम्बन का मूल्य जान है। माशूक़ अभी यह मूल्य क्यों माँगे ? उसे मालूम है कि यह अभी मरने वाला नहीं है। (इसलिए चुम्बन नहीं दिया कि वह मूल्य देने के योग्य है)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानअ़-ए-दश्त-नवरदी कोई तदबीर नहीं[1]।
एक चक्कर है मेरे पांव में ज़ंजीर नहीं।।
शौक़ उस दश्त[2] में दौड़ाये है मुझको कि जहां।
जादः ग़ैर-अज़-निगह-ए-दीदा-ए-तस्वीर नहीं[3]।।
सर खुजाता है जहां ज़ख़्मे-सर अच्छा हो जाए।
लज़्ज़्ते-संग बा-अंदाज़ा-ए-तक़रीर नहीं[4]।।

✣ ✣ ✣

राज़े-माशूक़ न रुसवा हो जाए।
वर्ना मर जाने में कुछ भेद नहीं।।
कहते हैं जीते हैं उम्मीद पे लोग।
हमको जीने की भी उम्मीद नहीं।।

✣ ✣ ✣

जहां तेरा नक़्शे-क़दम[5] देखते हैं।
ख़याबां-ख़याबां इरम[6] देखते हैं।।
बनाकर फ़क़ीरों का हम भेस 'ग़ालिब'।
तमाशा-ए-अहले-करम[7] देखते हैं।।

---

1. कोई चीज़ मुझे जंगलों की ख़ाक छानने से नहीं रोक सकती। 2. बियाबान, 3. जहाँ पगडंडी भी आश्चर्यचकित होकर चित्र की आँख की दृष्टि-रेखा बन गई, अर्थात् है ही नहीं, 4. सिर का घाव जब अच्छा हो जाता है तो फिर खुजाने लगता हूँ। जो पत्थर सिर पर लगा था उसके स्वाद को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। 5. पदचिह्न, 6. बहिश्त की वाटिकाएँ, 7. सखी लोगों का तमाशा—कौन कितना कृपालु है।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलती है ख़ू-ए-यार से नारइल्तिहाब[1] में।
काफ़िर हूं गर न मिलती हो राहत अज़ाब[2] में।।
कब से हूं क्या बताऊं जहाने-ख़राब में।
शबहा-ए-हिज्र को भी रखूं गर हिसाब में[3]।।
ता[4] फिर न इन्तिज़ार में नींद आए उम्र भर।
आने का वादा कर गए आए जो ख़्वाब में।।
क़ासिद के आते-आते ख़त इक और लिख रखूं।
मैं जानता हूं जो वो लिखेंगे जवाब में।।
मुझ तक कब उनकी बज़्म में आता था दौरे-जाम।
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में।।
जो मुनकिरे-वफ़ा[5] हो फ़रेब उस पे क्या चले।
क्यों बदगुमां हूं दोस्त से दुश्मन के बाब में[6]।।
मैं मुज़तरिब हूं वस्ल में ख़ौफ़े-रकीब से[7]।
डाला है तुमको वहम ने किस पेचोताब में।।
'ग़ालिब' छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी।
पीता हूं रोज़े-अब्रो-शबे-माहताब[8] में।।

✣ ✣ ✣

---

1. माशूक़ की बुरी आदत नरक के भड़कते शोलों-जैसी है, 2. दुःख, 3. यदि विछोह की लम्बी रातों को भी हिसाब में लिख लूँ तो यह कहना बहुत कठिन है कि मैं कब से इस संसार में रह रहा हूँ। 4. ताकि, 5. वफ़ा से इन्कारी, 6. संबंध में, 7. मैं संयोग के समय प्रतिद्वन्द्वी के भय से बेचैन हूँ कि कहीं वह ठीक संयोग के समय न आ निकले। 8. जिस दिन बादल हो या जिस रात चाँद निकला हुआ हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रौ में है रख़्शे-उम्र कहां देखिए थमे।
न हाथ बाग पर है न पा है रकाब में[1]।।
इतना ही मुझको अपनी हक़ीक़त से बो'द[2] है।
जितना कि वहमे-ग़ैर[3] से हूं पेचोताब में।।
असले-शुहूदो-शाहिदो-मशहूद एक है।
हैरां हूं फिर मुशाहिदा है किस हिसाब में[4] ?

✣ ✣ ✣

हैरां हूं दिल को रोऊं कि पीटूं जिगर को मैं।
मक़्दूर[5] हो तो साथ रखूं नौहागर[6] को मैं।।
छोड़ा न रश्क[7] ने कि तेरे घर का नाम लूँ।
हर इक से पूछता हूं कि जाऊं किधर को मैं।।
जाना पड़ा रक़ीब के दर पर हज़ार बार।
ऐ काश ! जानता न तेरी रहगुज़र को मैं।।
है क्या जो कस के बांधिए मेरी बला डरे।
क्या जानता नहीं हूँ तुम्हारी क़मर को मैं।।
लो वो भी कहते हैं कि ये बे-नंगो-नाम[8] है।
ये जानता अगर तो लुटाता न घर को मैं।।

---

1. आयु का घोड़ा इतना तेज़ दौड़ता है कि न तो लगाम हाथ में रही है न पैर रकाब में; देखें यह कहाँ जाकर थमता है। 2. दूरी (अज्ञान), 3. अवास्तविकता, 4. देखना भी वही, देखने वाला भी वही और जिसे देखा जा रहा है, वह भी वही। हैरान हूँ कि फिर 'देखना' क्या है! 5. सामर्थ्य, 6. पेशेवर रोने वाला, 7. ईर्ष्या, 8. निर्धन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलता हूं थोड़ी दूर हर इक तेज़-रौ[1] के साथ।
पहचानता नहीं हूं अभी राहबर[2] को मैं।।
ख़्वाहिश को अहमक़ों ने परस्तिश[3] दिया क़रार।
क्या पूजता हूं उस बुते-बेदादगर[4] को मैं।।
फिर बेखुदी में भूल गया राहे-कूए-यार[5]।
जाता वगरना एक दिन अपनी ख़बर को मैं।।

✣ ✣ ✣

ज़िक्र मेरा ब-बदी भी उसे मंजूर नहीं।
ग़ैर की बात बिगड़ जाए तो कुछ दूर नहीं।।
शाहिदे-हस्ती-ए-मुतलक़ की कमर है आलम।
लोग कहते हैं कि है, पर हमें मंजूर नहीं[6]।।
मैं जो कहता हूं कि हम लेंगे क़यामत में तुम्हें।
किस रऊनत[7] से वो कहते हैं कि हम हूर नहीं।।

✣ ✣ ✣

1. तेज़ चलने वाले के साथ, 2. पथ-प्रदर्शक, 3. उपासना, 4. ज़ालिम बुत (माशूक़), 5. यार की गली का रास्ता, 6. खुदा एक माशूक़ है और यह संसार उसकी कमर है। लोग कहते हैं कि उसका अस्तित्व है, लेकिन हम नहीं मानते, और इसलिए नहीं मानते कि माशूक़ की कमर नहीं होती (पतली कमर की उपमा के साथ तसव्वुफ़ की बात कही गई है)। 7. घमंड।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कम नहीं वो भी ख़राबी में पे वुसअत[1] मालूम।
दश्त[2] में है मुझे वो ऐश कि घर याद नहीं।।
करते किस मुंह से हो ग़ुरबत[3] की शिकायत 'ग़ालिब'।
तुमको बेमेहरि-ए-याराने-वतन[4] याद नहीं।।

✣ ✣ ✣

दोनों जहान देके वो समझे ये खुश रहा।
यां आ पड़ी ये शर्म कि तकरार क्या करें ?
थक-थक के हर मुक़ाम पे दो-चार रह गये।
तेरा पता न पायें तो नाचार क्या करें ?
क्या शमअ़ के नहीं है हवाख़्वाह[5] अहले-बज़्म।
हो ग़म ही जांगुदाज़[6] तो ग़मख़्वार क्या करें ?

✣ ✣ ✣

ये हम जो हिज्र[7] में दीवारो-दर को[8] देखते हैं।
कभी सबा[9] को कभी नामाबर[10] को देखते हैं।।
वो आयें घर में हमारे खुदा की कुदरत है।
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।।
नज़र लगे न कहीं उसके दस्तो-बाजू को[11]।
ये लोग क्यों मेरे ज़ख़्मे-जिगर[12] को देखते हैं।।

✣ ✣ ✣

---

1. विशालता, 2. बियाबान, 3. परदेस-निवास, 4. देश निवासी मित्रों की निर्दयता, 5. शुभचिंतक, 6. जान को घुलाने वाला, 7. बिछोह, 8. दीवारों और दरवाज़ों को, 9. सुबह की ठंडी हवा (सबा को सब कवि संदेश-वाहक मानते हैं), 10. पत्र-वाहक, 11. हाथों और बाँहों को, 12. दिल के घाव को (जो माशूक़ ने लगाया है)।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं कि मुझको क़यामत का एतक़ाद[1] नहीं।
शबे-फ़िराक़ से रोज़े-जज़ा ज़ियाद नहीं[2]।।
जो आऊं सामने उनके तो मरहबा[3] न कहें।
जो जाऊं वां से कहीं को तो ख़ैरबाद[4] नहीं।।
कभी जो याद भी आता हूं मैं तो कहते हैं।
कि आज बज़्म में कुछ फ़ित्ना-ओ-फ़साद नहीं।।
जहां में हो ग़मो-शादी बहम[5] हमें क्या काम।
दिया है हमको ख़ुदा ने वो दिल कि शाद[6] नहीं।।
तुम उनके वादे का ज़िक्र उनसे क्यों करो 'ग़ालिब'।
ये क्या कि तुम कहो और वो कहें कि याद नहीं।।

✣ ✣ ✣

दायम[7] पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूं मैं।
ख़ाक ऐसी ज़िंदगी पे कि पत्थर नहीं हूं मैं।।
क्यों गर्दिशे-मुदाम से[8] घबरा न जाए दिल।
इन्सान हूं पियाला-ओ-साग़र नहीं हूं मैं।
यारब ज़माना मुझको मिटाता है किसलिए।
लौहे-जहां पे हर्फ़े-मुकर्रर नहीं हूं मैं[9]।।
हद चाहिए सज़ा में उक़ूबत[10] के वास्ते।
आख़िर गुनाहगार हूं काफ़िर नहीं हूं मैं।।

✣ ✣ ✣

---

1. विश्वास, 2. प्रलय का दिन विछोह की रात से अधिक कष्टपूर्ण न होगा। 3. स्वागतम्, 4. 'ख़ैरबाद' विदा के समय बोलते हैं। 5. दुःख-सुख साथ-साथ हों। 6. प्रसन्न, 7. स्थायी रूप से, 8. तेरी तलाश में हर समय चक्कर काटने से, 9. संसार-रूपी तख़्ती पर लिखा हुआ फ़ालतू शब्द नहीं हूँ। 10. दुःख, सजा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब कहां कुछ लाला-ओ-गुल[1] में नुमायां[2] हो गईं।
ख़ाक में क्या सूरतें होंगी कि पिनहां[3] हो गईं।।
जू-ए-ख़ूं[4] आंखों से बहने दो कि है शामे फ़िराक़[5]।
मैं ये समझूंगा कि शमएं दो फ़रोज़ां[6] हो गईं।।
इन परीज़ादों से[7] लेंगे खुल्द[8] में हम इंतिक़ाम।
क़ुदरते-हक़ से[9] यही हूरें अगर वां हो गईं।।
नींद उसकी है, दिमाग़ उसका है, रातें उसकी हैं।
तेरी ज़ुल्फ़ें जिसके बाज़ू पर परीशां हो गईं।।
मैं चमन में क्या गया गोया दबिस्तां[10] खुल गया।
बुलबुलें सुनकर मेरे नाले[11] ग़ज़ल-ख़्वां[12] हो गईं।।
वो निगाहें क्यों हुई जाती हैं यारब दिल के पार।
जो मेरी कोताही-ए-क़िस्मत से[13] मिज़गां[14] हो गईं।।
वां गया भी मैं तो उनकी गालियों का क्या जवाब।
याद थीं जितनी दुआएं, सर्फ़-ए-दरबां[15] हो गईं।।
हम मुवह्हिद[16] हैं हमारा केश[17] है तर्के-रसूम[18]।
मिल्लतें[19] जब मिट गईं अजज़ा-ए-ईमां[20] हो गईं।।

---

1. फूलों, 2. प्रकट, 3. लुप्त, 4. ख़ून की नदी, 5. विछोह की शाम है, 6. ज्योतिर्मय, 7. परी के बेटों (सुन्दर माशूक़ों) से, 8. जन्नत, 9. खुदा की कुदरत से, 10. कविता-पाठ (राग की महफ़िल), 11. आर्तनाद, 12. गाने लगीं, 13. दुर्भाग्य से, 14. पलकें, 15. दरबान की भेंट, 16. भगवान को एक मानने वाला, 17. धर्म, 18. परम्पराओं को छोड़ना, 19. धर्म, जातियाँ, 20. धर्म का अंग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंज से ख़ूगर[1] हुआ इन्सां तो मिट जाता है रंज।
मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझ पर कि आसां हो गईं।।
यूं ही गर रोता रहा 'ग़ालिब' तो ऐ अहले-जहां[2]।
देखना इन बस्तियों को तुम कि वीरां हो गईं।।

✢ ✢ ✢

दिल को नियाज़े-हसरते-दीदार[3] कर चुके।
देखा तो हममें ताक़ते-दीदार[4] भी नहीं।।
मिलना तेरा अगर नहीं आसां तो सहल है।
दुश्वार[5] तो यही है कि दुश्वार भी नहीं।।
बेइश्क़ उम्र कट नहीं सकती है और यां।
ताक़त बक़दरे-लज़्ज़ते आज़ार भी नहीं[6]।।
इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ खुदा।
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।।
देखा 'असद' को ख़लवतो-जलवत में[7] बारहा।
दीवाना गर नहीं है तो हुशियार भी नहीं।।

✢ ✢ ✢

हुआ हूं इश्क़ की ग़ारतगरी[8] से शरमिंदा।
सिवाये हसरते-त्तामीर[9] घर में ख़ाक नहीं।

✢ ✢ ✢

---

1. अभ्यस्त, 2. दुनिया वालो, 3. दर्शनों की अभिलाषा की भेंट, 4. दर्शन करने की शक्ति, 5. कठिन, 6. इश्क़ में जो दुःख उठाए जाते हैं उनका रसपान करने की भी शक्ति नहीं। 7. एकान्त में भी और जन-समूह में भी, 8. तबाही, 9. निर्माण की अभिलाषा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिल ही तो है न संगो-ख़िश्त[1], दर्द से भर न आए क्यों ?
रोएंगे हम हज़ार बार कोई हमें सताए क्यों ?
दैर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आस्तां नहीं[2]।
बैठे हैं रहगुज़र पे हम, कोई हमें उठाए क्यों ?
जब वो जमाले-दिलफ़रोज़ सूरते-मेहरे-नीमरोज़।
आप ही हो नज़्ज़ारा-सोज़, पर्दे में मुंह छुपाए क्यों[3] ?
क़ैदे-हयातो-बंदे-ग़म[4] अस्ल में दोनों एक हैं।
मौत से पहले आदमी ग़म से नजात[5] पाए क्यों ?
हुस्न और उस पे हुस्नेज़न[6] रह गई बुलहवस[7] की शर्म।।
अपने पे एतमाद[8] है और को आज़माएं क्यों ?
हां वो नहीं खुदा परस्त[9], जाओ वो बेवफ़ा सही।
जिसको हो दीनो-दिल अज़ीज़[10] उसकी गली में जाए क्यों ?
'ग़ालिबे'-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बंद हैं।
रोइए ज़ार-ज़ार क्या, कीजिए हाए-हाए क्यों ?

∻ ∻ ∻

रात के वक़्त मय पिये साथ रक़ीब को लिए।
आए वो यां खुदा करे, पर न करे खुदा कि यूं।।

---

1. ईंट-पत्थर, 2. न यह मंदिर है, न काबे की चारदीवारी, न दरवाज़ा है, न दहलीज़। 3. जब वह मन को प्रकाशमान करनेवाला सौन्दर्य (माशूक़) दोपहर के सूरज की तरह देखने की शक्ति को जलाकर रख देता है और किसी में उसे देखने या उसकी ओर आँख उठाने की शक्ति नहीं रहती, तो फिर उसे पर्दे में रहने की क्या आवश्यकता है ? 4. जीवन की क़ैद और ग़म का बन्धन, 5. मुक्ति, 6. शुभ भ्रम, 7. लालची, 8. आत्मविश्वास, 9. आस्तिक, 10. धर्म और दिल दोनों प्रिय हों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ैर से रात क्या बनी, ये जो कहा तो देखिए।
सामने आन बैठना और यह देखना कि यूं।।
मैंने कहा कि बज़्मे-नाज़ चाहिए ग़ैर से तही[1]।
सुनके सितम-ज़रीफ़[2] ने मुझको उठा दिया कि यूं।।
मुझसे कहा जो यार ने, जाते हैं होश किस तरह।
देखके मेरी बेखुदी चलने लगी हवा कि यूं।।
कब मुझे कूए-यार[3] में रहने की वज़अ़[4] याद थी।
आईनादार बन गई हैरते-नक़्शे-पा कि यूं[5]।।

✣ ✣ ✣

रदीफ़ 'वाओ' (व, ओ)

वारस्ता[6] इससे हैं कि मुहब्बत ही क्यों न हो।
कीजे हमारे साथ अ़दावत[7] ही क्यों न हो।।
है मुझको तुझसे तज़किरा-ए-ग़ैर का गिला।
हरचंद बर-सबीले-शिकायत ही क्यों न हो[8]।।

---

1. आपकी महफ़िल ग़ैर (प्रतिद्वन्द्वी) से खाली होनी चाहिए। 2. जिसके अत्याचार में विनोद हो, 3. यार की गली, 4. ढंग, 5. पदचिह्न ने मुझे बताया कि मिट्टी में मिलकर और महबूब के जलवे से आश्चर्यचकित रहकर, 6. स्वतन्त्र, 7. द्वेष, शत्रुता, 8. तुमने प्रतिद्वन्द्वी की शिकायत की, लेकिन मुझे तो यह शिकायत है कि तुमने उसका नाम ही क्यों लिया ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पैदा हुई है कहते हैं हर दर्द की दवा।
यूं हो तो चारा-ए-ग़मे-उलफ़्त[1] ही क्यों न हो।।
है आदमी बजाए-खुद[2] इक महशरे-ख़याल[3]।
हम अंजुमन[4] समझते हैं, ख़लवत[5] ही क्यों न हो।।
मिटता है फ़ौते-फुरसते-हस्ती का ग़म नहीं।
उम्रे-अज़ीज़ सर्फ़े-इबादत ही क्यों न हो[6]।।
उस फ़ित्तना-ख़ू के दर से[7] अब उठते नहीं 'असद'।
इसमें हमारे सर पे क़यामत ही क्यों न हो[8]।।

खुदा शरमाए हाथों को कि रखते हैं कशाकश में।
कभी मेरे गिरेबां को कभी जानां[9] के दामन को।।
खुशी क्या, खेत पर मेरे और सौ बार अब्र[10] आवे।
समझता हूं कि ढूंढे है अभी से बर्क़[11] ख़िरमन[12] को।।
वफ़ादारी बशर्ते-उस्तावारी असले-ईमां है।
मरे बुतख़ाने में तो काबे में गाड़ो बिरहमन[13] को।।

---

1. प्रेम के दुःखों का इलाज, 2. स्वयं, 3. विचारों का प्रलय उठाने वाला (हर समय विचारों में डूबा रहने वाला), 4. जनसमूह, 5. एकांत, 6. जीवन के छोटे-से अवकाश के समाप्त हो जाने का ग़म नहीं मिट सकता, चाहे पूरी आयु प्रिय उपासना में व्यतीत कर दी जाए। 7. फ़ित्तने उठाने वाले के दरवाज़े पर से, 8. प्रलय ही क्यों न आ जाए (विशेषता यह है कि प्रलय [क़यामत] में सबको उठना पड़ेगा), 9. महबूब, 10. बादल, 11. बिजली, 12. खलियान, 13. जब ब्राह्मण अपनी पूरी आयु बुतख़ाने में (मूर्तिपूजा करते हुए) काट दे और वहीं मर जाए तो वह इस बात का पात्र है कि उसको काबे में दफ़्न किया जाए, इसलिए कि उसने वफ़ादारी का पूरा-पूरा हक़ अदा कर दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहादत[1] थी मेरी क़िस्मत में जो दी थी ये ख़ू[2] मुझको।
जहां तलवार को देखा झुका देता था गरदन को।।
न लुटता दिन को तो कब रात को यूं बेख़बर सोता।
रहा खटका न चोरी का दुआ देता हूं रहज़न[3] को।।

✣ ✣ ✣

धोता हूँ जब मैं पीने को उसी सीमतन[4] के पांव।
रखता है ज़िद से खेंच के बाहर लगन के पांव।।
भागे थे हम बहुत, सो उसी की सज़ा ये है।
होकर असीर[5] दाबते हैं राहज़न के पांव।।
मरहम की जुस्तजू में फिरा हूं जो दूर-दूर।
तन से सिवा फ़िगार[7] हैं इस ख़स्ता-तन के पांव।।
अल्ला रे ज़ौक़े-दश्त नवर्दी[8] कि बादे-मर्ग[9]।
हिलते हैं खुद-ब-खुद मेरे अन्दर क़फ़न के पांव।।
शब[10] को किसी के ख़्वाब में आया न हो कहीं।
दुखते हैं आज उस बुते-नाजुक-बदन के पांव।।

✣ ✣ ✣

वां उसको हौले-दिल[11] है तो यां मैं हूं शर्मसार।
यानी ये मेरी आह की तासीर से न हो।।

✣ ✣ ✣

---

1. वीर गति, 2. स्वभाव, 3. डाकू, 4. चाँदी जैसे बदन वाले महबूब के, 5. बन्दी, 6. रास्ते में लूटने वाला (डाकू), 7. जख़्मी, 8. बियाबानों में घूमने का शौक़, 9. मृत्यु के बाद, 10. रात, 11. दिल डूबने की बीमारी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिल को मैं और मुझे दिल महवे-वफ़ा[1] रखता है।
किस क़दर ज़ौक़े-गिरफ़्तारी-ए-ग़म[2] है हमको।।
जानकर कीजे तग़ाफुल[3] कि कुछ उम्मीद भी हो।
ये निगाहे-ग़लत-अंदाज़[4] तो सम[5] है हमको।।
सर उड़ाने के जो वादे को मुकर्रर[6] चाहा।
हंस के बोले कि तेरे सर की क़सम है हमको।।

✣ ✣ ✣

तुम जानो तुमको ग़ैर से जो रस्मो-राह[7] हो।
मुझको भी पूछते रहो तो क्या गुनाह हो।।
क्या वो भी बेगुनाह-कुश-ओ-हक़-नाशनास है।
माना कि तुम बशर नहीं खुरशीदो-माह हो[8]।।
उभरा हुआ नक़ाब में उनके है एक तार।
मरता हूं मैं कि ये न किसी की निगाह हो।।
जब मैकदा छुटा तो फिर अब क्या जगह की क़ैद।
मस्जिद हो मदरसा हो कोई ख़ानक़ाह हो।।

✣ ✣ ✣

गई वो बात कि हो गुफ़्तगू तो क्योंकर हो।
कहे से कुछ न हुआ फिर कहो तो क्योंकर हो ?

---

1. प्रेम में निमग्न, 2. प्रेम की पीड़ा में गिरफ़्तार रहने का शौक़, 3. बेपरवाही, 4. भूल में पड़ने वाली नज़र, 5. विष, 6. दोबारा, 7. संबंध, 8. यह मान लिया कि तुम मानव नहीं हो, सूरज और चांद हो। लेकिन सूरज और चांद तो न किसी निरपराध का वध करते हैं, न किसी का हक़ छीनते हैं, फिर तुम में ये अब गुण क्यों हैं ?

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे ज़ेहन[1] में इस फ़िक्र का है नाम विसाल[2]।
कि ग़र न हो, तो कहां जाएं, हो, तो क्योंकर हो ?
उलझते हो तुम अगर देखते हो आईना।
जो तुम से शहर में हों एक-दो, तो क्योंकर हो ?
जिसे नसीब हो रोज़े-सियाह[3] मेरा-सा
वो शख़्स दिन न कहे रात को तो क्योंकर हो ?

✣ ✣ ✣

किसी को दे के दिल कोई नवासंजे-फ़ुगां क्यों हो[4] ?
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुंह में ज़ुबां क्यों हो ?
वो अपनी ख़ू[5] न छोड़ेंगे हम अपने वज़अ[6] क्यों बदलें ?
सुबकसर[7] बन के क्या पूछें कि हमसे सरगिरां[8] क्यों हो ?
किया ग़मख़्वार ने[9] रुसवा लगे आग इस मुहब्बत को।
न लाए ताब[10] जो ग़म की वो मेरा राज़दां[11] क्यों हो ?
वफ़ा कैसी, कहां का इश्क़, जब सर फोड़ना ठहरा।
तो फिर ऐ संगदिल[12] तेरा ही संगे-आस्तां[13] क्यों हो ?
क़फ़स[14] में मुझसे रूदादे-चमन[15] कहते न डर हमदम[16]।
गिरी है जिस पे कल बिजली वो मेरा आशियाँ[17] क्यों हो ?
ये फ़ितना, आदमी की ख़ाना-वीरानी को क्या कम है।
हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका आस्मां क्यों हो ?

---

1. मस्तिष्क, 2. मिलन, 3. काला दिन (दुःख-भरा जीवन), 4. आर्तनाद क्यों करे ? 5. आदत, 6. ढंग, 7. हीन, 8. रुष्ट, 9. दुःख बाँटने वाले ने, 10. सहन न कर सके, 11. भेदी, 12. पत्थरदिल, 13. दहलीज़ का पत्थर, 14. पिंजरा, 15. बाग़ का वृत्तान्त, 16. साथी, 17. घोंसला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यही है आज़माना तो सताना किसको कहते हैं ?
उदू के हो लिए जब तुम तो मेरा इम्तिहां क्यों हो ?
कहा तुमने कि क्यों हो ग़ैर के मिलने में रुसवाई।
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि हां क्यों हो ?

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहां कोई न हो।
हम-सुख़न[1] कोई न हो और हमज़बां[2] कोई न हो।।
बे-दरो-दीवार-सा[3] एक घर बनाया चाहिए।
कोई हमसाया न हो और पासबां[4] कोई न हो।।
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार[5]।
और अगर मर जाइये तो नौहाख्वां[6] कोई न हो।।

रदीफ़ 'ये' (ए-इ-ई)

ग़ैर के मर्ग[7] का ग़म किस लिए ऐ ग़ैरते-माह[8]।
हैं हवस-पेशा[9] बहुत वो न हुआ और सही।।
तुम हो बुत[10] फिर तुम्हें पिंदारे-खुदाई[11] क्यों है ?
तुम खुदावंद ही कहलाओ खुदा और सही।।

1-2. बात करने वाला और बात समझने वाला, 3. बिना दरवाज़े और दीवारों का, 4. रक्षक, 5. परिचर्याकर्त्ता, 6. रोने वाला, 7. मृत्यु, 8. चाँद को शरमाने वाले, 9. कामी, 10. सौन्दर्य की मूर्ति, 11. खुदा होने का गौरव (दावा)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई दुनिया में मगर बाग़ नहीं है वाइज़[1]।
ख़ुल्द[2] भी बाग़ है ख़ैर आबो-हवा और सही।।
मुझको वो दो कि जिसे खा के न पानी मांगूं।
ज़हर कुछ और सही आबे-बक़ा[3] और सही।।
क्यों न फ़िर्दौस[4] को दोज़ख[5] में मिला लें यारब।
सैर के वास्ते थोड़ी सी फ़ज़ा[6] और सही।।

✣ ✣ ✣

मस्जिद के ज़ेरे-साया[7] ख़राबात[8] चाहिए।
भौं पास आंख क़िबला-ए-हाजात[9] चाहिए।।
आशिक़ हुए हैं आप भी एक और शख़्स पर।
आख़िर सितम की कुछ तो मुकाफ़ात[10] चाहिए।।
सीखे हैं महरुखों[11] के लिए हम मुसव्वरी[12]।
तक़रीब[13] कुछ तो बहरे-मुलाक़ात[14] चाहिए।।
मै से ग़रज़ निशात है किस रू-सियाह को[15]।
एक-गूना बेखुदी[16] मुझे दिन-रात चाहिए।।

✣ ✣ ✣

कटे तो शब कहें, काटे तो सांप कहलावे।
कोई बताओ कि वो ज़ुल्फ़े-ख़म-ब-ख़म[17] क्या है ?

✣ ✣ ✣

1. धर्मोपदेशक, 2. स्वर्ग, 3. अमृत, 4. स्वर्ग, 5. नरक, 6. खुला स्थान, 7. छाया में, 8. शराब-ख़ाना, 9. ऐ उपदेशक ! 10. बदला, 11. चाँद जैसे चेहरे वाले माशूक़ों के लिए, 12. चित्रकारी, 13. अवसर, 14. मुलाक़ात के लिए, 15. कौन काला चेहरा (मूर्ख), शराब से आनन्द प्राप्त करना चाहता है ? 16. ज़रा-सी आत्मविस्मृति, 17. पेचदार केश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है ग़नीमत कि ब-उम्मीद गुज़र जाएगी उम्र।
न मिले दाद मगर रोज़े-जज़ा[1] है तो सही।।
ग़ैर से देखिए क्या ख़ूब निबाही उसने।
न सही हमसे पर उस बुत में वफ़ा है तो सही।।
नक़्ल करता हूं उसे नामा-ए-एमाल[2] में मैं।
कुछ न कुछ रोज़े-अज़ल[3] तुमने लिखा है तो सही।।

✣ ✣ ✣

ता[4] हमको शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा[5]।
सुन लेते हैं गो ज़िक्र हमारा नहीं करते।।
'ग़ालिब' तेरा अहवाल[6] सुना देंगे हम उनको।
वो सुन के बुला लें ये इजारा[7] नहीं करते।।

✣ ✣ ✣

घर में था क्या कि तेरा ग़म उसे ग़ारत करता।
वो जो रखते थे हम एक हसरते-तामीर[8] सो है।।

✣ ✣ ✣

ग़मे-दुनिया से गर पाई भी फ़ुर्सत सर उठाने की।
फ़लक का देखना तक़रीब तेरे याद आने की[9]।।
खुलेगा किस तरह मज़मूं मेरे मकतूब[10] का यारब।
क़सम खाई है उस काफ़िर ने क़ाग़ज़ के जलाने की।।

✣ ✣ ✣

---

1. प्रतिदान दिवस, 2. कर्म-पत्र, 3. सृष्टि का प्रथम दिन, 4. ताकि, 5. जगह (गुंजायश), 6. हाल, 7. ठेका, 8. निर्माण की अभिलाषा, 9. सिर उठने से आकाश नज़र आता है, इसके साथ ही उसके (तुम्हारे) अत्याचार याद आ जाते हैं। 10. पत्र।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरे दिल में गर न था आशोबे-ग़म का हौसला।
तू ने फिर क्यों की थी मेरी ग़मगुसारी हाए, हाए।।
क्यों मेरी ग़मख़्वारगी का तुझको आया था ख़याल।
दुश्मनी अपनी थी मेरी दोस्तदारी हाए, हाए।।
उम्र भर का तूने पैमाने-वफ़ा बांधा तो क्या।
उम्र की भी तो नहीं है पायदारी हाए, हाए।।
शर्मे-रुसवाई से जा छुपना नक़ाबे-ख़ाक[1] में।
खत्म है उल्फ़त की तुझ पर पर्दादारी हाए, हाए।।
किस तरह काटे कोई शबहा-ए-तारे-बरशगाल[2]।
है नज़र ख़ू कर्दा-ए-अख़्तर शुमारी[3] हाए, हाए।।
इश्क़ ने पकड़ा न था 'ग़ालिब' अभी वहशत का रंग।
रह गया था दिल में जो कुछ ज़ौके-ख़्वारी[4] हाए, हाए।।

✣ ✣ ✣

सरगश्तगी में आलमे-हस्ती से यास है।
तस्कीं को दो नवेद कि मरने की आस है[5]।।
लेता नहीं मेरे दिले-आवारा की ख़बर।
अब तक वो जानता है कि मेरे ही पास है।।
पी जिस क़दर मिलेशबे-महताब[6] में शराब।
इस बलग़मी मिज़ाज को गर्मी ही रास है।।

✣ ✣ ✣

---

1. मिट्टी के नक़ाब में (कब्र में), 2. बरसात की अंधेरी रात, 3. आँखें तारे गिन-गिनकर रात काटने की अभ्यस्त हैं। 4. ख़्वार होने का शौक, 5. दिल की शान्ति हमारी शत्रु हो गई, अब उसे यह शुभ सूचना दो कि प्रेमोन्माद में हम जीवन से निराश हो चुके हैं। 6. पूनम की रात को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IIKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, है, खुदा-न-ख़्वास्ता वो और दुश्मनी।
ऐ शौक़े-मुनफ़इल[1] तुझे यह क्या ख़याल है।।
हस्ती के मत फ़रेब में आ जाइयो 'असद'।
आलम[2] तमाम हल्क़ा-ए-दामे-ख़याल[3] है।।

✣ ✣ ✣

एक जा[4] हर्फ़े-वफ़ा[5] लिक्खा था वो भी मिट गया।
ज़ाहिरा कागज़ तेरे ख़त का गलत-बरदार[6] है।।
आग से पानी में बुझते वक़्त उठती है सदा।
हर कोई दरमांदगी में नाले से लाचार है[7]।।
आंख की तस्वीर सरनामे पे खेंची है कि ता[8]।
तुझ पे खुल जावे कि उसको हसरते-दीदार[9] है।।

✣ ✣ ✣

ख़िज़ा क्या, फ़सले-गुल[10] कहते हैं किसको, कोई मौसम हो।
वही हम हैं, क़फ़स[11] है और मातम बालो-पर का[12] है।।

✣ ✣ ✣

इश्क़ मुझको नहीं, वहशत ही सही।
मेरी वहशत तेरी शोहरत ही सही।।
क़तअ[13] कीजे न तअ़ल्लुक़ हमसे।
कुछ नहीं है तो अदावत[14] ही सही।।

---

1. ऐ लज्जित अभिलाषा ! 2. विश्व, 3. विचारों का एक जाल-मात्र है। 4. जगह, 5. 'प्रेम' का शब्द, 6. जिस पर से शब्द मिटाए जा सकें, 7. लाचारी में आर्तनाद करने पर विवश है, 8. ताकि, 9. दर्शनों की अभिलाषा, 10. वसन्त, 11. पिंजरा, 12. पंख और बाल नोच लिए जाने का शौक़, 13. [illegible], 14. द्वेष, शत्रुता।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे होने में है क्या रुसवाई।
ऐ, वो मजलिस नहीं ख़लवत[1] ही सही।।
हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने।
ग़ैर को तुझसे मुहब्बत ही सही।।
अपनी हस्ती ही से हो जो कुछ हो।
आगही[2] गर नहीं ग़फ़लत ही सही।।
उम्र हरचंद कि है बर्क़-ख़िराम[3]।
दिल के ख़ूं करने की फुरसत ही सही।।
हम कोई तर्के-वफ़ा[4] करते हैं।
न सही इश्क़ मुसीबत ही सही।।
हम भी तसलीम[5] की ख़ू[6] डालेंगे।
बेनियाज़ी तेरी आदत ही सही।।
यार से छेड़ चली जाए 'असद'।
गर नहीं वस्ल तो हसरत ही सही।।

✣ ✣ ✣

ढूंढे है उस मुग़न्नी-ए-आतिश-नफ़स[7] को जी।
जिसकी सदा हो जलवा-ए-बर्क़-फ़ना मुझे[8]।।
खुलता किसी पे क्यों मेरे दिल का मुआमला।
शे'रों के इंतखाब[9] ने रुसवा किया मुझे।।

✣ ✣ ✣

---

1. एकांत, 2. ज्ञान, 3. बिजली की सी गति से गुज़रने वाली, 4. प्रेम निभाने से इन्कार, 5. नतमस्तक होना, 6. आदत, 7. ऐसा गीत गाने वाला जिनके स्वर में आग भरी हो, 8. जो मृत्यु की बिजली गिराकर मुझे भस्म कर डाले, 9. चयन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस बज़्म में मुझसे नहीं बनती हया किये।
बैठा रहा अगरचे इशारे हुआ किये।।
दिल ही तो है सियासते-दरबां[1] से डर गया।
मैं और जाऊं दर से तेरे बिन सदा किये।।
बेसर्फ़ा ही गुज़रती है हो गरचे उम्र-ख़िज़्र[2]।
हज़रत भी कल कहेंगे कि हम क्या किया किये।।
मक़्दूर हो तो[3] खाक[4] से पूछो कि ऐ लईम[5]।
तू नें वो गंजहा-ए-गिरांमायः[6] क्या किये।।
सोहबत में ग़ैर की न पड़ी हो कहीं ये ख़ू[7]।
देने लगा है बोसे बग़ैर इल्तिजा किये।।
'ग़ालिब' तुम्हीं कहो कि मिलेगा जवाब क्या।
माना कि तुम कहा किये और वो सुना किये।।

✣ ✣ ✣

देखना क़िस्मत कि आप अपने पे रश्क आ जाये है।
मैं उसे देखूं भला कब मुझसे देखा जाये है।।
ग़ैर को यारब वो क्योंकर मनअ़-गुस्ताख़ी करे[8]।
गर हया भी उसको आती है तो शर्मा जाये है।।
होके आशिक़ वो परी-रुख़[9] और नाज़ुक बन गया।
रंग खिलता जाए है जितना कि उड़ता जाये है।।

✣ ✣ ✣

---

1. दरबान की चालों से, 2. एक दीर्घ आयु, पैग़म्बर (ख़िज़्र) जितनी आयु, 3. पूछने की शक्ति आ जाए तो, 4. पृथ्वी, 5. कंजूस, 6. महान आत्माएँ, 7. आदत, 8. गुस्ताखी करने से रोके, 9. परी जैसे चेहरे वाला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सादगी पर उसकी मर जाने की हसरत दिल में है।
बस नहीं चलता कि फिर खंजर कफ़े-क़ातिल में है[1] ।।
गरचे है किस-किस बुराई से वले बा-ई-हमां[2] ।
ज़िक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि उस महफ़िल में है।।
बस हुजूमे-नाउमीदी[3] ! ख़ाक में मिल जाएगी।
ये जो इक लज़्ज़त[4] हमारी सइ-ए-बेहासिल में[5] है।।
रंजें-रह क्यों खेंचिये वामांदगी को इश्क़ है।
उठ नहीं सकता हमारा जो क़दम मंजिल में है[6] ।।

✣ ✣ ✣

वो बादा-ए-शबाना की सरमस्तियां कहां।
उठिये बस अब कि लज़्ज़ते-ख़्वाबे-सहर गई[7] ।।
उड़ती फिरे है ख़ाक मेरी कूए-यार में।
बारे अब ऐ हवा हवस-ए-बालो-पर गई[8] ।।
नज़्ज़ारे ने भी काम किया वां नक़ाब का।
मस्ती से हर निगह तेरे रुख़ पर[9] बिखर गई।।

✣ ✣ ✣

---

1. उसकी सादगी पर मरने की हसरत दिल में रह जाती है क्योंकि वह तुरंत खंजर निकाल लेता है। 2. यद्यपि महफ़िल में वे मेरी बहुत बुराई करते हैं, 3. निराशाओं के हुजूम, 4. आनन्द, 5. व्यर्थ के प्रयत्न में, 6. रास्ता चलने का कष्ट क्यों झेलें, निराशाओं को हमसे इश्क़ हो गया है और वे एक पग भी नहीं चलने देतीं। 7. अब यौवन-काल कहाँ, उठिए अब जवानी की नींद छोड़िये। 8. ऐ हवा, भगवान का शुक्र है कि अब पंख रखने की लालसा समाप्त हो गई। 9. चेहरे पर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तसकीं को हम न रोयें जो ज़ौक़े-नज़र मिले[1] ।
हूराने-खुल्द में[2] तेरी सूरत मगर मिले।।
अपनी गली में मुझको न कर दफ़्न बादे-क़त्ल ।
मेरे पते से ख़ल्क़ को[3] क्यों तेरा घर मिले।।
साक़ीगरी की शर्म करो आज वर्ना हम।
हर शब पिया ही करते हैं मय जिस क़द्र मिले।।
तुझसे तो कुछ कलाम नहीं[4] लेकिन ऐ नदीम[5] ।
मेरा सलाम कहियो अगर नामाबार मिले।।
तुमको भी हम दिखाएंगे मजनूं ने क्या किया।
फुर्सत कशाकशे-ग़मे-पिनहां से[6] गर मिले।।
लाज़िम नहीं कि ख़िज्र की हम पैरवी करें।
माना कि इक बुजुर्ग हमें हमसफ़र मिले।।
ऐ साकिनाने-कूचा-ए दिलदार[7] देखना।
तुमको कहीं जो 'ग़ालिबे'-आशुफ़्ता-सर[8] मिले।।

✢ ✢ ✢

कोई दिन गर ज़िंदगानी और है।
अपने जी में हमने ठानी और है।।
आतिशे-दोज़ख़[9] में ये गर्मी कहां ?
सोज़े-ग़महा- ए-निहानी[10] और है।।

---

1. तुम्हें देखकर आँखें तृप्त हों, 2. बहिश्त की हूरों में, 3. लोगों को, 4. कहना नहीं, 5. मित्र, 6. निरन्तर दुखों के द्वन्द्व से, 7. दिलदार की गली में रहने वालो ! 8. 'ग़ालिब' जो इश्क़ के हाथों दीवाना हो चुका है, 9. नरक की आग, 10. निहित ग़म की गर्मी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारहा देखी हैं उनकी रंजिशें।
पर कुछ अब के सरगिरानी और है।।
दे के ख़त मुंह देखता है नामाबर।
कुछ तो पैग़ामे-ज़बानी और है।।
हो चुकी 'ग़ालिब' बलाएं सब तमाम।
एक मर्गे-नागहानी[1] और है।।

✣ ✣ ✣

कोई उम्मीद बर नहीं आती[2]।
कोई सूरत नज़र नहीं आती।।
मौत का एक दिन मुअ़य्यन[3] है।
नींद क्यों रात भर नहीं आती।।
आगे आती थी हाले-दिल पर हंसी।
अब किसी बात पर नहीं आती।।
जानता हूं सवाबे-ताअ़तो-ज़ुह्द[4]।
पर तबीयत इधर नहीं आती।।
है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूं।
वरना क्या बात कर नहीं आती?
क्यों न चीखूं कि याद करते हैं।
मेरी आवाज़ गर नहीं आती।।
हम वहां हैं जहां से हमको भी।
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती।।

---

1. आकस्मिक मृत्यु, 2. पूरी नहीं होती, 3. नियत, 4. संयम तथा उपासना के पुण्य फल से परिचित हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मरते हैं आरजू में मरने की।
मौत आती है पर नहीं आती।।
काबा किस मुँह से जाओगे 'ग़ालिब'।
शर्म तुमको मगर नहीं आती।।

✣ ✣ ✣

दिले नादां तुझे हुआ क्या है ?
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है ?
हम हैं मुश्ताक़[1] और वो बेज़ार।
या इलाही ये माजरा क्या है ?
मैं भी मुंह में ज़बान रखता हूँ।
काश ! पूछो कि मुद्दआ क्या ?
जबकि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद।
फिर ये हंगामा ऐ खुदा ! क्या है ?
ये परी-चेहरा लोग कैसे हैं ?
ग़मज़ा-ओ-इश्वा-ओ-अदा[2] क्या है ?
सब्ज़ा-ओ-गुल[3] कहां से आए हैं
अब्र[4] क्या चीज़ है, हवा क्या है ?
हमको उनसे वफ़ा की है उम्मीद।
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है ।
हां, भला कर तेरा भला होगा।
और दरवेश की सदा[5] क्या है ?

---

1. उत्सुक, 2. नाज़ और अदा, 3. पत्ते, फूल, 4. बादल, 5. फ़कीर की आवाज़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जान तुम पर निसार करता हूँ।
मैं नहीं जानता दुआ़ क्या है ?
मैंने माना कि कुछ नहीं 'ग़ालिब'।
मुफ्त हाथ आए तो बुरा क्या है ?

✣ ✣ ✣

कहते तो हो तुम सब कि बुते-ग़ालिया-मू[1] आए।
इक मर्तबा[2] घबरा के कहो कि वो आए।।
जल्लाद से डरते हैं न वाइज़[3] से झगड़ते।
हम समझे हुए हैं उसे जिसभेस में जो आए।।
अपना नहीं ये शेवा कि आराम से बैठें।
उस दर पे[4] नहीं बार[5] तो काबा ही को हो आए।।

✣ ✣ ✣

फिर उसी बेवफ़ा पे मरते हैं।
फिर वही ज़िंदगी हमारी है।।
बेखुदी बेसबब नहीं 'ग़ालिब'।
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है।।

✣ ✣ ✣

बे-तलब दें तो मज़ा उसमें सवा मिलता है।
वो गदा[6] जिसका न हो ख़ू-ए-सवाल[7] अच्छा है।।
देखिए पाते हैं उश्शाक़[8] बुतों में क्या फ़ैज़ ?
इक बिरहमन ने कहा है कि ये साल अच्छा है।

---

1. सुगन्धित केशों वाला, 2. एक बार, 3. उपदेशक, 4. दरवाजे पर, 5. पहुँच, 6. भिखारी, 7. माँगने की आदत, 8. आशिक लोग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके देखे से जो आ जाती है मुंह पर रौनक़।
वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।।
हम-सुख़न[1] तेशा ने फ़रहाद को शीरीं से किया।
जिस तरह का कि किसी में हो कमाल अच्छा है।।
क़तरा दरिया में जो मिल जाए तो दरिया हो जाए।
काम अच्छा है वो जिसका कि मआल[2] अच्छा है।।
हमको मालूम है जन्नत की ह्क़ीक़त लेकिन।
दिल के खुश करने को 'ग़ालिब' यह ख़याल अच्छा है।।

✣ ✣ ✣

एक हंगामे पे मौक़ूफ़[3] है घर की रौनक़।
नौहा-ए-ग़म[4] ही सही नग़मा-ए-शादी[5] न सही।।
न सताइश[6] की तमन्ना न सिले[7] की परवा।
गर नहीं है मेरे अशआर में मानी[8] न सही।।

✣ ✣ ✣

शिकवा के नाम से बेमेहर[9] खफ़ा होता है।
ये भी मत कह कि जो कहिए तो गिला होता है।।
पुर[10] हूं मैं शिकवे से यूं राग से जैसे बाजा।
इक ज़रा छेड़िए फिर देखिए क्या होता है।।

---

1. परस्पर बातचीत पर तैयार, 2. परिणाम, 3. आधारित, 4. आर्तनाद, 5. खुशी के गीत, 6. प्रशंसा, 7. पुरस्कार, 8. अर्थ, 9. निर्दयी, 10. परिपूर्ण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्यों न ठहरें हदफ़े-नावके-बेदाद कि हम।
आप उठा लाते हैं गर तीर ख़ता होता है[1]।।
ख़ूब था पहले से होते जो हम अपने बदख़्वाह[2]।
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है।।
नाला[3] जाता था परे अ़र्श से मेरा और अब।
लब तक आता है जो ऐसा ही रसा[4] होता है।।
रखियो 'ग़ालिब' मुझे इस तल्ख़नवाई से[5] मुआ़फ़।
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सवा होता है।।

✣ ✣ ✣

हर एक बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है ?
तुम्हीं कहो कि ये अंदाज़े-गुफ़्तगू क्या है ?
न शोले में ये करिश्मा[6] न बर्क़[7] में ये अदा।
कोई बताओ कि वो शोख़े-तुंद-ख़ू[8] क्या हैं ?
रगों में दौड़ते-फिरने के हम नहीं क़ाइल।
जब आंख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है ?
वो चीज़ जिसके लिए हमको हो बहिश्त अज़ीज़।
सिवाये वादा-ए-गुलफ़ामे-मुश्कबू क्या है ?

---

1. हम उसके तीर (अत्याचारों) का निशाना क्यों न बनें, क्योंकि तीर खाने का हमें इतना शौक है कि यदि तीर चूक जाता है तो हम स्वयं उठा कर उसे पुनः चलाने वाले के हवाले कर देते हैं (कि दोबारा आज़मा)। 2. बुरा चाहने वाले, 3. आर्तनाद, 4. पहुँचने वाला, 5. कटु बात कहने से, 6. चमत्कार, 7. बिजली, 8. कटु स्वभाव का माशूक़ (न उसकी शोले से उपमा दी जा सकती है न बिजली को)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पियूं शराब अगर ख़ुम[1] भी देख लूं दो चार।
ये शीशा-ओ-क़दह-ओ-कूज़ा-ओ-सुबू[2] क्या है ?
रही न ताक़ते-गुफ़्तार,[3] और अगर हो भी।
तो किस उमीद पे कहिए कि आरज़ू क्या है ?

मैं उन्हें छेड़ूँ और कुछ न कहें।
चल निकलते जो मय पिये होते।।
क़हर हो या बला हो, जो कुछ हो।
काश ! कि तुम मेरे लिए होते।।
मेरी क़िस्मत में ग़म गर इतना था।
दिल भी यारब ! कई दिये होते।।
आ ही जाता वो राह पर 'ग़ालिब'।
कोई दिन और भी जिये होते।।

ग़ैर लें महफ़िल में बोसे जाम के।
हम रहें यूं तिश्नालब[4] पैग़ाम के।।
ख़स्तगी का[5] तुमसे क्या शिकवा किये।
हथकँडे हैं चर्ख़े-नीलीफ़ाम[6] के।।
ख़त लिखेंगे गरचे मतलब कुछ न हो।
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के।।
इश्क़ ने 'ग़ालिब' निकम्मा कर दिया।
वर्ना हम भी आदमी थे काम के।।

---

1. मटके, 2. बोतल, प्याले आदि, 3. वाक्-शक्ति, 4. प्यासे, 5. टूटे दिल का, 6. आकाश (ख़ुदा)।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नुक्ताचीं[1] है ग़में-दिल उसको सुनाये न बने।
क्या बने बात जहां बात बनाये न बने।।
मैं बुलाता तो हूं उसको मगर ऐ जज़्बा-ए-दिल।
उस पे बन जाए कुछ ऐसी कि बिन आए न बने।।
खेल समझा है, कहीं छोड़ न दे, भूल न जाए।
काश यूं भी हो कि बिन मेरे सताए न बने।।
ग़ैर फिरता है लिए यूं तेरे ख़त को कि अगर।
कोई पूछे कि ये क्या है तो छुपाये न बने।।
इस नज़ाकत का बुरा हो वो भले हैं तो क्या।
हाथ आयें तो उन्हें हाथ लगाये न बने।।
कह सके कौन कि ये जलवागरी[2] किसकी है।
पर्दा छोड़ा है वो उसने कि उठाये न बने।।
मौत की राह न देखूं कि बिन आये न रहे।
तुमको चाहूं कि न आओ तो बुलाए न बने।।
बोझ वो सर से गिरा है कि उठाये न उठे।
काम वो आन पड़ा है कि बनाये न बने।।
इश्क़ पर ज़ोर नहीं है ये वो आतश[3] ग़ालिब।
कि लगाए न लगे और बुझाये न बने।।

कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाए है मुझसे।
जफ़ाएं करके अपनी याद शर्मा जाए है मुझसे।।

1. मीनमेख निकालने वाला, 2. प्रदर्शन, 3. आग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुदाया जज़्बा-ए-दिल की मगर तासीर[1] उलटी है।
कि जितना खेंचता हूं और खिंचता जाए है मुझसे।।
वो बद खू[2] और मेरी दास्ताने-इश्क़ तूलानी[3]।
इबारत मुख़्तसर, क़ासिद भी घबरा जाए है मुझसे[4]।।
उधर वो बदगुमानी है इधर ये नातवानी है।
न पूछा जाए है उससे न बोला जाए है मुझसे।।
हुए हैं पांव ही पहले नबर्दे-इश्क़ में[5] ज़ख़्मी।
न भागा जाए है मुझसे, न ठहरा जाये है मुझसे।।
कयामत है कि होवे मुद्दई का हमसफ़र 'ग़ालिब'।
वो काफ़िर जो खुदा को भी न सौंपा जाए है मुझसे।।

✣ ✣ ✣

बाज़ीचा-ए-इतफ़ाल[6] है दुनिया मेरे आगे।
होता है शबो-रोज़ तमाशा मेरे आगे।।
मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे।
तू देख कि क्या रंग है तेरा मेरे आगे।।
नफ़रत का गुमां गुज़रे है मैं रश्क से गुज़रा[7]।
क्योंकर कहूं लो नाम न उनका मेरे आगे।।
ईमां मुझे रोके है तो खींचे है मुझे कुफ़्र।
काबा मेरे पीछे है, कलीसा मेरे आगे।।

---

1. प्रभाव, 2. बुरी आदत वाला (बात नहीं सुनता) 3. प्रेम-कथा लम्बी है, 4. संक्षेप में यह कि यदि संदेश पत्रवाहक को सुनाऊँ तो वह भी घबरा जाता है। 5. इश्क़ से जूझने के प्रारंभ में ही, 6. बच्चों का खेल, 7. ईर्ष्यावश मैं उनका नाम किसी की ज़बान पर आना सहन नहीं करता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुश होते हैं पर वस्ल में यूं मर नहीं जाते।
आई शबे-हिजरां[1] की तमन्ना मेरे आगे।।
गो हाथ को जुंबिश[2] नहीं आंखों में तो दम है।
रहने दो अभी सागरो-मीना मेरे आगे।।

रोने से और इश्क़ में बेबाक हो गए।
धोए गए हम ऐसे ही बस पाक[3] हो गए।।
कहता है कौन नाला-ए-बुलबुल को[4] बेअसर।
पर्दे में गुल[5] के लाख जिगर चाक हो गए[6]।।
पूछे है क्या वजूदो-अदम अहले-शौक़ का[7]।
आप अपनी आग से ख़सो-ख़ाशाक[8] हो गए।।
करने गए थे उससे तग़ाफुल[9] का हम गिला।
की एक ही निगाह कि बस ख़ाक हो गए।।
इस रंग से उठाई कल उसने 'असद' की लाश।
दुश्मन भी जिसको देख के ग़मनाक[10] हो गए।।

इब्ने-मरियम[11] हुआ करे कोई।
मेरे दुख की दवा करे कोई।।

---

1. जुदाई की रात, 2. हाथ नहीं हिल सकते, 3. पवित्र (आज़ाद, निश्चिंत), 4. बुलबुल के आर्तनाद को, 5. फूल, 6. फट गये, 7. आशिक़ों के जीवन-मरण की बात क्यों पूछते हो ? 8. घास-फूस (ईंधन), 9. उपेक्षा, 10. शोकातुर, 11. मरियम का पुत्र ईसा (हर दुख की दवा करने वाला)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरअ़-ओ-आईन-पर मदार सही।
ऐसे क़ातिल का क्या करे कोई[1]।।
बात पर वां ज़बान कटती है।
वो कहें और सुना करे कोई।।
बक रहा हूं जुनूं में क्या क्या कुछ।
कुछ न समझे, खुदा करे कोई।।
न सुनो गर बुरा कहे कोई।
न कहो गर बुरा करे कोई।।
रोक लो गर ग़लत चले कोई।
बख़्श दो गर ख़ता[2] करे कोई।।
कौन है जो नहीं है हाजतमंद[3]।
किसकी हाजत रवा[4] करे कोई।।
जब तवक़्क़ो ही उठ गई 'ग़ालिब'।
क्यों किसी का गिला करे कोई।।

✣ ✣ ✣

हज़ारों ख्वाहिशें[5] ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।।
डरे क्यों मेरा क़ातिल, क्या रहेगा उसकी गरदन पर।
वो ख़ूं जो चश्मे-त्तर से[6] उम्र भर यूं दम-ब-दम निकले।।

---

1. माना कि संसार धर्म तथा नियमों का पाबन्द है और अपराधी को दण्ड देता है लेकिन ऐसे क़ातिल का कोई क्या करे जो बिना तलवार के क़त्ल कर देता है। 2. अपराध, 3. ज़रूरतमन्द, 4. पूरी, 5. अभिलाषाएँ, 6. सजल नेत्रों से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निकलना खुल्द[1] से आदम[2] का सुनते आए थे लेकिन।
बहुत बे-आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।।
मगर[3] लिखवाये कोई उसको ख़त तो हमसे लिखवाये।
हुई सुब्ह और घर से कान पर रखकर क़लम निकले।।
मुहब्बत में नहीं है फ़र्क़ जीने और मरने का।
उसी को देखकर जीते हैं जिस काफ़िर पे दम निकले।।
खुदा के वास्ते पर्दा न काबे का उठा वाइज़[4]।
कहीं ऐसा न हो यां भी वही काफ़िर सनम[5] निकले।।
कहां मैख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहां वाइज़।
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले।।

✣ ✣ ✣

जोशे-जुनूं से[6] कुछ नज़र आता नहीं 'असद'।
सहरा[7] हमारी आंख में यक मुश्ते-ख़ाक[9] है।।

✣ ✣ ✣

पच[9] आ पड़ी है वादा-ए-दिलदार की[10] मुझे।
वो आए या न आए पे यां इंतिज़ार है।
बेपर्दा सूए-वादी-ए-मजनूं[11] गुज़र न कर।
हर ज़र्रे के नक़ाब[12] में दिल बेक़रार है।।

✣ ✣ ✣

1. स्वर्ग, 2. आदि-मानव (गेहूँ का दाना खा लेने के अपराध में भगवान ने आदम को स्वर्ग से निकाल दिया था (इस्लामी परम्परा)। 3. यहाँ मगर का अर्थ 'शायद' है, 4. उपदेशक, 5. बुत, 6. उन्माद के वेग के कारण, 7. बियाबान, 8. मुट्ठी भर धूल, 9. जिद, 10. महबूब के वादे की, 11. मजनूँ की वादी (बियाबान), 12. पर्दे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आईना क्यों न दूं कि तमाशा कहें जिसे।
ऐसा कहाँ से लाऊं कि तुझ सा कहें जिसे।।
फूंका है किसने गोश-ए-मुहब्बत में ऐ खुदा।
अफ़सूने-इंतिज़ार तमन्ना कहें जिसे[1]।।
'ग़ालिब' बुरा न मान जो वाइज़ बुरा कहे।
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहें जिसे।।

✣ ✣ ✣

नाकर्दा गुनाहों की हसरत की भी मिले दाद।
यारब अगर इन कर्दा-गुनाहों की सज़ा है[2]।।

✣ ✣ ✣

गो वां नहीं पे वां के निकाले हुए तो हैं।
काबा से इन बुतों को भी निस्बत[3] है दूर की।।
क्या फ़र्ज़[4] है कि सबको मिले एक-सा जवाब।
आओ न हम भी सैर करें कोहे-तूर[5] की।।
गर्मी सही कलाम में[6] लेकिन न इस क़दर।
की जिससे बात उसने शिकायत ज़रूर की।।

✣ ✣ ✣

---

1. भगवान ! प्रेम के एकान्त में यह किसने प्रतीक्षा का जादू फूँक डाला—इसे ही तो आकांक्षा तमन्ना कहते हैं। 2. जो पाप हमने किए हैं यदि उनका दण्ड अवश्य मिलना है तो जो पाप किसी कारण हमसे नहीं हो सके और जिनके करने की मन में अभिलाषा रह गई, उनकी दाद भी अवश्य मिलनी चाहिए। 3. संबंध, 4. आवश्यक, 5. तूर पहाड़, जिस पर खड़े होकर हज़रत मूसा ने खुदा से बातें की थीं—मूसा ने कहा था, 'ऐ खुदा ! मुझको दिखाई दे', उत्तर मिला था कि 'तू नहीं देख सकेगा।' 6. बातचीत में।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुद्दत हुई है यार को मेहमां किए हुए।
जोशे-क़दह से बज़्म-चिराग़ां किए हुए[1]।।
करता हूं जमअ़ फिर से जिगरे लख़्त-लख़्त को।
मुद्दत हुई है दावते-मिज़गां किए हुए[2]।।
बाहमदिगर हुए हैं दिलो-दीदा फिर रक़ीब।
नज़्ज़ारा-ओ-ख़याल का सामां किए हुए[3]।।
दिल फिर तवाफ़े-कूए-मलामत को जाए है।
पिंदार का सनमकदा वीरां किए हुए[4]।।
फिर शौक़ कर रहा है ख़रीदार को तलब।
अर्ज़े-मताए-अक़्लो-दिलो-जां किए हुए[5]।।
मांगे है फिर किसी को लबे-बाम पर हवस।
ज़ुल्फ़े-सियाह रुख़ पे परीशां किए हुए[6]।।
इक नौबहारे-नाज़[7] को ताके है फिर निगाह।
चेहरा फ़रोग़े-मय से गुलिस्तां किए हुए।।

---

1. शराब के प्यालों से महफ़िल में दीपावली किए हुए, 2. उस दिल को जो टुकड़े-टुकड़े हो चुका है, एकत्र कर रहा हूँ ताकि वे अपने पलकों को मेरे दिल की दावत खिला सकें, 3. फिर आँखों ने तुझे देखने का साहस किया, फिर दिल ने तेरे ख़याल पर ध्यान दिया, फिर वे दोनों एक ही महबूब पर आशिक़ हो एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी हो गये। 4. दिल ने फिर उस कूचे में चक्कर काटने का इरादा कर लिया है, जहाँ अपमान किया जाता है, आत्मसम्मान के मंदिर से निकालकर। 5. बुद्धि, दिल और जान की कीमत देकर, 6. मेरी लालसा फिर किसी को इस तरह छत के किनारे पर देखना चाहती है कि उसके काले केश चेहरे पर बिखरे हों। 7. नाज़-नखरों के वसंत (महबूब) को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर जी में है कि दर पे किसी के पड़े रहें।
सर ज़ेर-बारे-मिन्नते-दरबां किए हुए[1]।।
जी ढूँढ़ता है फिर वही फुर्सत कि रात दिन।
बैठे रहें तसव्वुरे-जानां[2] किए हुए।।

✣ ✣ ✣

गदा[3] समझ के वो चुप था, मेरी जो शामत आई।
उठा और उठ के क़दम मैंने पासबां के लिए[4]।।
बक़द्रे-शोक़ नहीं ज़र्फ़ तंगनाए-ग़ज़ल।
कुछ और चाहिए वुसअ़त मेरे बयां के लिए[5]।।
ज़बां पे बारे-खुदाया[6] ये किसका नाम आया।
कि मेरे नुत्क़[7] ने बोसे मेरी ज़बां के लिए।।
अदाए-ख़ास से 'ग़ालिब' हुआ है नुक्तासरा।
सला-ए-आ़म है याराने-नुक्तादां के लिए[8]।

WITH LOVE TO
HINDU EDUCATION SOCIETY KASHMIR
FROM :
DR. N.L. ZUTSHI, Mumbai

□□□

1. सिर पर दरबान के उपकार का बोझ लिए हुए, 2. महबूब का ख़याल, 3. भिखारी, 4. दरबान के पाँव पर गिर पड़ा, 5. ग़ज़ल की तंग गली (संकुचित क्षेत्र) मेरे शे'र कहने के शौक के अनुकूल सामर्थ्य नहीं रखती। मेरे शे'रों के लिए विशाल क्षेत्र की आवश्यकता है। 6. हे भगवान ! 7. वाक्-शक्ति, 8. 'ग़ालिब' ने ये शे'र विशेष ढंग से कहे हैं। मर्मज्ञों और मित्रों को वह विशेष ढंग से अपनाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

...कास है मेरा तग़य्युर नाम है मेरा ...
मेरा नारा 'इंकिलाब-ए-इंकिलाब-ए-इंकिलाब'
-जोश मलीहाबादी

...फ़िरा...

पूछते हैं वो कि 'ग़ालिब' कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलाएँ क्या
-ग़ालिब

...कील...

...मोहब्बत की बोली

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उर्दू के लोकप्रिय शायर

नागरी लिपि में उर्दू के लोकप्रिय शायरों व उनकी शायरी पर आधारित पहली सुव्यवस्थित पुस्तकमाला। इसमें मीर, गालिब से लेकर साहिर लुधियानवी-मजरूह सुलतानपुरी तक सभी प्रमुख उस्तादों और लोकप्रिय शायरों की चुनिंदा शायरी उनकी रोचक जीवनियों के साथ अलग-अलग पुस्तकों में प्रकाशित की गई हैं। इस पुस्तकमाला की प्रत्येक पुस्तक में संबंधित शायर के संपूर्ण लेखन से चयन किया गया है और प्रत्येक रचना के साथ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये गये हैं। इसका संपादन अपने विषय के दो विशेषज्ञ संपादकों–सरस्वती सरन कैफ व प्रकाश पंडित–से कराया गया है। अब तक इस पुस्तकमाला के अनगिनत संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और पाठकों द्वारा इसे सतत सराहा जा रहा है।

ग़ालिब

ग़ालिब उर्दू के सबसे मशहूर शायर हैं। वे बहादुरशाह जफ़र के जमाने में हुए और 1857 का गदर उन्होंने देखा। अव्यवस्था और निराशा के उस ज़माने में वे अपना हृदयग्राही व्यक्तित्व, मानव-प्रेम, सीधा स्पष्ट यथार्थ और इन सबसे अधिक, दार्शनिक दृष्टि लेकर साहित्य में आये। शुरू में तो लोगों ने उनकी मौलिकता की हंसी उड़ाई लेकिन बाद में उसे इतनी तेजी से बढ़ावा मिला कि शायरी की दुनिया का नज़ारा ही बदल गया।

ISBN 81-7028-204-7

9 788170 282044

राजपाल

रु. 50/-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant